आप बीती (टी.बी. रोगी की)

टी.बी. रोगी बीमारी को फैलने से कैसे रोके?

1. ज्यादा से ज्यादा समय बाहर ताजी हवा में रहो – जैसे खुले में, पार्क में, छत पर, खेत में, आंगन में या किसी पेड़ के नीचे। अगर मौसम सही है तो रात को भी बाहर सो जाओ।
2. खाँसी करते समय मुंह पर रूमाल रखो।
3. बंद कमरे में न रहो। भीड़–भाड़ से दूर रहो। इधर–उधर कभी मत थूको।
4. छोटे बच्चों को गोद में उठाना, चूमना या साथ सुलाना उचित नहीं है।
5. नशे से दूर रहो जैसे बीड़ी, सिगरेट, गुटका, तम्बाकू व शराब इत्यादी।
6. अच्छा सन्तुलित खाना खाओ जैसे–दूध, हरी सब्जी, दाले व फल आदि।
7. टी0बी0 का इलाज है। दवाई नियम से 6 से 8 महीने खानी चाहिए।
8. महीने, दो महीने के इलाज से ही काफी आराम आ जाता है। लेकिन इलाज पूरा करो– 6 से 8 महीने। बीच में कभी न छोड़ो।
9. इलाज के हर 2 महीने होने पर बलगम की जांच करवाओ।

सावधानी की अधिक आवश्यकता फेफड़े के उन टी. बी. रोगियो को है, जिनकी बलगम में कीटाणु हों यानी जो स्पूटम पॉजिटिव हैं क्योंकि यही बिमारी फैलाते हैं। फेफड़े को छोड़ जब टीबी दूसरे अंगों में होती है तो यह एक से दूसरे को नही फैलती। यानि हड्डी, जोड़, गुर्दा, गाँठ, दिमाग, जिगर, आतड़ी या पेट इत्यादी की टी.बी. के मरीज दूसरों में संक्रमण नहीं करते।

डा. रमन कक्कड़

gekjh vU; pkj iLrd Hkh i< &

1- Vh-ch dk d] [k] x 3- Vh-ch- dh ,-ch-lh-Mh
2- Vh-ch- dh 1] 2] 3 4- Vh- ch- dk igyk ikBA

Concept, Compiled, Edited & Published by: Dr. Raman Kakar

This copy of book is donated by :

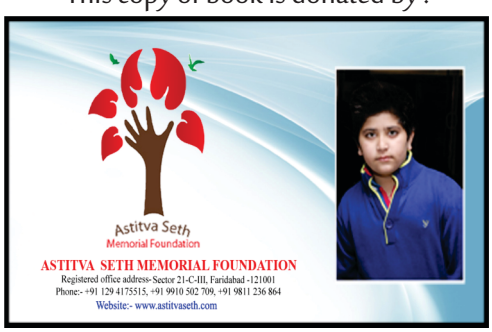

lk<+ dj iLrd okfil dj!

भूखे पेट

शशि बाला
टी.बी.एच.वी., सिविल
डिस्पेंसरी ओल्ड फरीदाबाद

भावना की हालत बहुत सीरियस थी। अपने आप से वह एक कदम भी नहीं चल पा रही थी । उसका पति उसे गोद में उठाकर ओल्ड फरीदाबाद में डिस्पेन्सरी में लाया था। पीछे–2 उसके दो छोटे–छोटे बच्चे भी मेरे पास आ कर मेरी टाँगों से लिपट गये थे।

भावना को बहुत तेज बुखार था। छाती के दर्द से कराह रही थी। तेज–तेज साँसे ले रही थी। बिल्कुल दुबली पतली कमजोर थी। पिछले 4–5 महीने से बीमार थी। मैंने उसका कार्ड पढ़ा। डा0 रमन कक्कड़ ने उसको पहली श्रेणी की टी.बी. की दवा देना निर्धारित किया था, उसके फेफड़े की झिल्ली में पानी था। यह फेलने वाली टीबी नही थी। शुक्र है, उसके दोनो नन्हे–मुन्हे बच्चों को संक्रमण का कोई खतरा नही था।

मैंने उसकी दवा का डिब्बा (टी.बी. नं0 329/12) भारत कालोनी वाली डिस्पेन्सरी (जो उसके घर के बगल में थी) में रखवा दिया । जहाँ दशरथ लैब टैक्निशियन की देख रेख में उसकी दवा नियमित चलने लगी । करीब 15–20 दिन बाद उसका पति भावना को फिर से उठाकर मेरे पास लाया। मीयाँ–बीवी दोनो बहुत उदास थे। बोले, "शशि दीदी, कुछ करो। कोई आराम नहीं है।" जाहिर था कि उसकी हालत और ज्यादा बदतर हो गई थी। मैंने फौरन उन्हें दोबारा बी.के. अस्पताल भेजा और डा0 कक्कड़ को फोन भी कर दिया। जाँच के बाद उन्होने बताया टी.बी. की दवा धीरे–धीरे असर करेगी। कुछ भी हो जाये दवा नहीं छूटनी चाहिए। हाँ, बुखार व दर्द के लिये अलग से कुछ दवाइयाँ दिलवा दी थी।

मुझे मालूम था कि बहुत देर हो चुकी है। भावना तो अब शायद बच नहीं पायेगी। भावना बोली, "शशि दीदी, मेरे बाद इन नन्हे मुन्नों का क्या होगा। ये दोनो बच्चे तो आजकल कई बार भूखे ही सो जाते हैं।" दोनो मासूम बच्चे आपस में खेला–खेली कर रहे थे, खिलखिला रहे थे। अपने परिवार पर मँडराती हुई प्रलय से बेखबर थे। मेरा मन बहुत दुखी था। उस रात मैं भी भूखे पेट ही सो गई।

कई महीनों बाद मैं अपनी टीबी की रिपोर्टों में व्यस्त थी। अचानक हमारी नर्स ने मुझे बर्फी खिला दी। "यह किस खुशी में ?" मैंने पूछा। उसने जवाब दिया ''अपनी रिश्तेदार से पूछो जो बाहर खड़ी हैं।" उत्सुकतावश मैं उठी और कमरे से बाहर आई। देखा एक सुन्दर सी स्वस्थ सी महिला मिठाई का डिब्बा लेकर खड़ी है। मुझे देखते ही वह हँसकर बोली," शशि दीदी, मैं तो जीने की आस ही छोड़ चुकी थी। आपका अहसान मैं जीवन भर नहीं उतार सकती। " मैं हैरान परेशान थी "आप कौन हो ?" मैंने पूछा।

"भावना" उसके दोनों बच्चे भाग कर आये और मेरी टांगों से लिपट गये। काश! हर टी.बी. रोगी के साथ ऐसा चमत्कार हो पाता।

पहला इलाज–सुनहरी मौका

विजय पाल
टी.बी.एच.वी., सरकारी अस्पताल
एम्स बल्लभगढ़ ।
हर साल करीब 600 टी.बी. रोगियों को ठीक करने की जिम्मेवारी उठाते हैं। सब मरीजों से मोबाइल के जरिये जुड़े रहते हैं। दिन रात उनकी सेवा में तत्पर रहते हैं। उनके घरों में जाकर टी.बी. की जानकारी फैलाते हैं। इन्हें टी.बी. उन्मूलन का जनून है।
मोबाइलः 9953482599

"अरे राजबीर, यह लड्डू किस खुशी में बाँट रहे हो " ?

"डाक्टर साहब मेरी शादी है जी "

"अरे वाह–वाह, बहुत–बहुत मुबारक हो भैया," मेरे मुँह से निकला।

लेकिन अगले ही क्षण मेरी जुबान लड़खड़ाई और ठिठकर जाम हो गई । मैं हकलाया, "अरे लेकिन....." राजबीर को तो टी.बी. थी। अभी डेढ़ महीने पहले ही इसकी बलगम की रिर्पोट में टी.बी. के कीटाणु देखे गये थे । इसका प्रथम श्रेणी का इलाज (टी.बी. नं. 564/10) अभी शुरुआती दौर में ही तो था । बलगम की दूसरी जाँच होने में अभी दो हफ्ते बाकी थे । भगवान जाने आज की तारीख में राजबीर की बीमारी किस स्थिति पर पहुँची है । यह अभी भी खांसी के साथ कीटाणु निकाल रहा हो । और दूसरों को संक्रमित करने में समर्थ हो। ऐसे में शादी कर अपनी पत्नी को इंफेक्शन के चंगुल में डालने की क्या जरुरत है ?

"राजबीर, तुम मजाक कर रहे हो क्या ?"

"नहीं, डाक्टर साहब अगले रविवार को मेरी शादी है । बहुत अच्छा परिवार मिला है । दहेज में नीली हीरो हॉडा की मोटरसाइकिल आ रही है जी ।"

"राजबीर ऐसा मत करो । शादी के चक्कर में तुम्हारा डॉटस का इलाज बीच में ही टूट जायेगा । **टी.बी. में पहली बार का इलाज ही सबसे अच्छा मौका होता है पूरी तरह ठीक होने का। पहली बार ही टीबी को जड़ से ठीक कर लेना चाहिए। इसे चूक जाओ तो पछताना पड़ता है।** अपनी दुल्हन को भी कहीं तुम बीमारी न दे दो। बस छः महीने रुक जाओ तसल्ली से लग के पहले अपना ईलाज पूरा कर लो । नीली बाईक बाद में चलाते रहना ।"

"डाक्टर साहब इतनी बढ़िया पार्टी मिली है । अब कृपया इसमें रुकावट मत डालो । लड्डू अभी खा लो । शादी का कार्ड आपको नहीं दे रहा – मेरी बीमारी के बारे में किसी से कुछ मत कहना जी ।" और राजबीर गायब हो गया और उसने ईलाज छोड़ दिया । कई महीनों बाद राजबीर ने फिर से आकर बलगम की जाँच कराई तो रिपोर्ट बहुत खराब आई । उसकी तबीयत काफी खराब थी । उसने बताया उसकी बहू भी उसको छोड़कर वापिस मायके जा चुकी है । हमने दूसरी श्रेणी का इलाज शुरु किया (टी.बी. नं0 179/11) । लेकिन सब बेकार । तीसरी पारी भी लेनी पड़ी (टी.बी. नं0 16/12)। अंततः उसे शायद लाईलाज टी.बी. बन गई।

जो जिन्दगी से खिलवाड़ करता है, जिन्दगी उससे खिलवाड़ करती है ।

तीन देवियाँ

शशि बाला
टी.बी.एच.वी., सिविल डिस्पेंसरी
ओल्ड फरीदाबाद

मनोज की हालत कुछ ज्यादा ही बिगडी हुई थी। गलत–गलत प्राइवेट डाक्टरों के चक्कर में बहुत टाईम व रूपया खराब कर चुका था। बलगम की जांच में कीटाणु थे यानि संक्रमण वाली टी.बी. थी।

हाल ही में उसका इलाज टी.बी. नम्बर 373/08 के अंतर्गत हमारे ओल्ड फरीदाबाद के अस्पताल में चलाया गया था। एक दिन जब मैं रूटीन विजिट पर उसके घर पहुंची तो देखा वह एक तंग सी गली में अपने किराये के छोट से घुटन भरे कमरे में लेटा हुआ था, न कोई खिडकी न कोई रोषनदान। मैंने उसे उठने को कहा । उसको लेकर फौरन उसकी छत पर चली आई – खुले में । वहाँ बैठाकर मैंने उसको समझाया कि बन्द कमरे में रहने से तुम्हारी खाँसी के कीटाणु तुम्हारे बच्चों को संक्रमित कर देंगें। वो भी बीमार पड़ जाएंगे । अतः तुम अपनी चारपाई यहाँ ऊपर ले आओ खुली हवा में। यहीं छत पर डेरा डालो कुछ दिन के लिये – जब तक बलगम की रिपोर्ट में कीटाणु साफ नहीं हो जाते। मनोज की बलगम की 3 प्लस रिपोर्ट आए हुए 20 दिन हो चुके थे। अभी तक किसी डा० या स्वास्थ्य कर्मचारी ने इसे इतना भी समझाने का कष्ट नहीं किया था? यह कदम तो इसके इलाज का एक मूलभूत हिस्सा है । मैं यह सोचकर सिहर उठी कि कहीं पहले ही मनोज अपने बच्चों को टी.बी. का उपहार दे तो नहीं चुका? कहीं मुझे आने में देर तो नहीं हो चुकी? इसी सोच विचार में उलझे हुए मैंने पूछा , " मनोज तुम्हारे बच्चे कितने हैं।''

वह बोला – ''एक बेटा और तीन देवियाँ ।" उसकी पत्नी बोली, "इन्हें अपनी तीन बेटियों से बहुत प्यार है। बेटी तो देवी समान होती ही हैं। इनको एक मिनट भी अपने से दूर नहीं करते जी ये। स्कूल से आते ही चारों बच्चे इनको चिपट जाते हैं। बस आते ही ये चारों को होमवर्क करायेंगें । हमारा एक ही सपना है चारों बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलवाना।"

मैंने उससे कहा, "उन चारों बच्चों को स्कूली शिक्षा के बजाए एक दूसरी शिक्षा की कहीं ज्यादा जरुरत है, आज।'' उसने कहा, "जी? हम समझे नहीं।" मैंने कहा, "तुम्हारे परिवार के लिये हिन्दी, अंग्रेजी या गणित से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण एक दूसरा विषय है – टी.बी. रोगी क्या उपाय करे कि उसके बच्चों में बीमारी के बीज न पड़ने पाऐं।" मीयाँ बीवी अवाक से खड़े रहे जैसे मेरी बात को समझने की कोशिष कर रहे हों। मैंने सख्ती से बोला कि, "फिलहाल तो 2 महीने उनसे उचित दूरी बनाकर रखो। उनको इस बिमारी से बचाओ।"

मनोज बोला, "जी! जैसा आप कहो। मुझे बहुत चिंता है। 3–3 बेटियों का बोझ है मेरे ऊपर।"

मुझे उसपर बहुत तरस आया । लेकिन टी.बी. के कीटाणु को नहीं। दिनांक 4–8–2008 को मनोज चल बसा। कुछ दिनों बाद उसकी बेटी नेहा का इलाज टी.बी. नम्बर 890/08 शुरू हो गया। फिर अगले वर्ष 7 साल की अंजली ने भी हमारे विभाग में दस्तक दी। टीबी नम्बर 59/10 के तहत उसका भी इलाज किया।

दिनांक 26–6–2011 को मनोज की छोटी बेटी गुंजन की दवा के डिब्बे पर भारी मन से मुझे टीबी नम्बर 984/11 लिखना पड़ा। इतना ही नहीं अभी पिछले महीने गुँजन का दूसरी पारी का इलाज टीबी नम्बर 326/12 के तहत चलाया गया है।

हे भगवान ! यह सिलसिला कब थमेगा !

इंजैक्शन कहाँ लगाऊँ

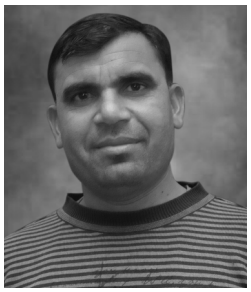

ijohu dekj
çDVh'kuj

"मेहरबानी करके मेरा कमरा खाली कर दो डाक्टर साहब, अपना क्लीनिक कहीं और खोलो जाकर।" मकान मालिक की बात सुनकर मैं एक दम हक्का बक्का रह गया। अचानक इसे क्या हो गया है ? मैंने ऐसी क्या गलती कर दी है? फिर वह बोला, "ना जाने कैसे–2 डरावने टी.बी. के मरीज आते रहते हैं और थूकते रहते हैं। हमें भी बीमारी लग जायेगी।"

अच्छा, तो यह बात है। वह नए मरीज अरविन्द की नाजुक हालत देखकर घबरा गया था। वाकई में अरविन्द की हालत बहुत जर्जर थी। टी.बी. ने उस बेचारे को हड्डियों के एक ढांचे में तब्दील कर डाला था।

मैंने फौरन उस मरीज को वापिस उसके ऑटो में बिठाया और यह कहकर चलता किया कि, "अभी तुम जाओ, दवा लेकर मैं तुम्हारे घर आता हूँ।" उसके जाने के बाद मैंने जैसे तैसे अपने मकान मालिक को शाँत किया और वादा किया कि, "अब यह मरीज अरविन्द यहाँ कभी नहीं आयेगा।"

उस दिन के बाद मैं खुद अरविन्द की दवा तथा टीका लेकर उसके घर जाता रहा। उसे इंजैक्शन लगाते समय मुझे बेहद तकलीफ होती क्योंकि उसके कूल्हे पर माँस तो जैसे था ही नहीं। सुई घुसाते ही सीधी जाकर हड्डी से टकराती थी। दिल पर पत्थर रखकर जैसे तैसे मैंने उसका इलाज टी.बी. नं0 867/12 के तहत शुरु किया। मुझे बहुत चिंता थी क्योंकि अरविंद ने पिछले साल भी टी. बी. का ईलाज किया था लेकिन बीच में ही छोड़ दिया था। शुक्र है अबकी बार कोई गलती नहीं की। मेहनत सफल हुई। अरविन्द न केवल ठीक हो गया बल्कि काफी हट्टा कट्टा हो गया। 6 महीनों में 6 किलो वजन बढ़ गया था। एक दिन उसे देखकर मेरे मकान मालिक को तो विश्वास ही नहीं हुआ कि यह वही मरीज है जो हड्डियों का ढाँचा हुआ करता था। हैरानी से उसका मुँह खुला का खुला रह गया। फिर अरविंद के जाने के बाद वह मुझसे बोला, "चमत्कार हो गया। मुर्दे में जान डाल दी। मुझे माफ कर दो डा0 साहब। जिन्दगी भर यहीं रहेगी आपकी क्लीनिक। मेरे घर को छोड़ कर कभी मत जाना जी।" उसकी आवाज में पश्चाताप झलक रहा था।

फरिश्ता

शारदा रानी
टी.बी.एच.वी., प्राइमरी स्वास्थ्य केन्द्र, पल्ला।

साठ साल के बुर्जुग मिश्री लाल की हालत बहुत सीरियस थी । टूटी फूटी चारपाई पर बेसुध लेटा पड़ा था और कराह रहा था । इतना दुबला कि जैसे हड्डियों का एक ढांचा, उठने में भी असमर्थ था । उसका टूटा–फूटा कमरा ऐसे उजड़ा पड़ा था कि मानो दस साल से वहाँ कोई रह ही न रहा हो । कमरे में सिवाय चारपाई के और कोई भी सामान नहीं था । न कोई बर्तन, न कोई कपड़ा । बस दीवार पर एक कील पर पॉलीथीन की थैली लटकी पड़ी थी, जिसमें सूखे सड़े सेब दिख रहे थे । बीमारी और गरीबी दोनों की यह चरम सीमा थी । ऐसे में कहाँ से तो ये रोटी खायेगा और कौन इसकी दवाईयाँ हमारी डिस्पेन्सरी से लायेगा, और कौन इसे खिलायेगा । मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था । इसी उधेड़ बुन में मैं काफी देर तक उस कमरे में खड़ी रही और सोचती रही कि यह मरीज तो नहीं बचेगा ।

इतने में उसकी पत्नी जो खुद एक कमजोर सी बुढ़िया थी, अन्दर आई, "नमस्ते डॉक्टर बेटी"। मैंने जवाब दिया, "नमस्ते माता जी । " खैर उसके बाद मैंने डाट्स के टी.बी. के इलाज के बारे में सारी बातें समझाई व मरीज व उसके सारे परिवार का सारा विवरण कागजों में दर्ज किया । क्योंकि मिश्री लाल की बलगम की रिपोर्ट में कीटाणु आये थे, इसलिये मैंने पूछा, "आपके यहाँ छोटे बच्चे तो नहीं हैं ?" दोनों ने कोई जवाब नहीं दिया। मैंने फिर पूछा ''माता जी आपके बच्चे तो नहीं हैं ?" बुढिया ने फफक–फफक कर रोना शुरु कर दिया, और बस रोती ही रही। चुप होने का नाम ही नहीं ले रही थी। बाद में बोली, "बेटी, बच्चों की तो मौज है। भरा पूरा खुशहाल परिवार है हमारा, लेकिन मनहूस टी.बी. का नाम आते ही उन सबने हमें घर से निकाल बाहर किया है। तभी तो इस कमरे में खटिया डाली है। "

मैं सोचती रही कि वो कैसे बच्चे होंगें जिन्होने ऐसे नाजुक समय पर अपने बूढ़े माँ–बाप को सहारा देने के बजाए मौत की खाई में ढकेल दिया है। अगले दिन अपनी पल्ला की डिसपेन्सरी की खिड़की में से मैं बाहर देख रही थी कि मेरी नजर उस बुढिया पर पड़ी जो एक टूटे फूटे साइकिल के कैरियर पर बैठकर आ रही थी । साइकिल एक 30 या 35 वर्ष का आदमी चला रहा था । मैंने शुक्र मनाया कि उनके एक बेटे को तो अक्ल आई। मिश्री लाल टी.बी. नं0 975/10 का पहली श्रेणी का टी.बी. की दवा का एक पत्ता निकाल कर तुरन्त बुढिया को थमा दिया। बस उसके बाद इसी तरह हफ्ते में तीन बार उनका वही बेटा अपनी टूटी फूटी साइकिल पर बुढिया को बैठाकर लाता और वे दवा ले जाते।

मिश्री लाल की बलगम भी वही साइकिल सवार दे जाता। जैसे तैसे समय बीतता गया और करीब 6 महीने के बाद मैं उनके कमरे में दौबारा गई तो हैरान रह गई। मिश्री लाल बाहर बैठा मस्ती से सुड़क–सुड़क कर गरमा गर्म दूध पी रहा था। वह काफी स्वस्थ लग रहा था। अम्मा मेरे लिए चाय बना लाई। हमने खूब बातें की। मैं बहुत खुशी महसूस कर रही थी – मानों मेरी लॉटरी लग गई हो। जब भी कोई सीरियस मरीज ठीक होता है तो अपार संतोष व खुशी प्राप्त होती है।

बातों बातों में मैंने पूछा, "अम्मा वो तुम्हारा बेटा नजर नहीं आ रहा, वो साइकिल वाला।" वो बोली, ''वो हमारी बहुत सेवा करता है। हमारे लिए वो फरिश्ता है, और बेटों से भी बढ़कर है। वो हमारा मालिक मकान है।''

जुदाई

शशि बाला
टी.बी.एच.वी., सिविल
डिस्पेंसरी ओल्ड फरीदाबाद

''शशी बेटी कुछ ऐसा चमत्कार कर कि ये बुढ़िया भी मेरे संग चल दे। मेरे जाने के बाद इस बेचारी का क्या होगा ? यह तो अकेली बाजार जाकर कभी एक किलो आटा भी खरीद कर नहीं लाई।'' चमनलाल की बात सुनकर मैं दंग रह गई। इतनी निराशा! चमनलाल की उम्र 62 साल की थी। और मैं उसका पहली श्रेणी का इलाज टी.बी. नं0 53/10 के तहत कर रही थी। शुरु–शुरु में तो चमन लाल ने ठीक तरह से दवा ली और काफी आराम भी मिला। लेकिन अब 2 हफ्ते से वो दवा लेने नहीं आ रहा था जिस वजह से मुझे दवा के पत्ते उठाकर उनके घर आना पड़ा था। उसकी पत्नी वाकई बहुत बूढ़ी और कमजोर दिखती थी। वो काँपती हुई आवाज में बोली, "बेटी इसे समझा, जिस दिन से हमारे दोनो बेटों ने हमें अपने घर से निकाल बाहर किया है और किराए के इस कमरे में शरण ली हैं, ये बुढ्ढा बहुत उदास रहता है, दिन रात रोता रहता है। दवा खाई या नहीं–इसे कोई परवाह नहीं है।"

"जब मेरे जिगर के टुकड़ों ने ही मुझे मरने के लिए लावारिस छोड़ दिया है तो मैं अब जी कर क्या करुँगा ?" बाबा बोला, "हमारा अच्छा खासा परिवार था–बेटे, बहुऐं, पोता, पोती–हर बात की मौज थी। टी.बी. की मनहूस छाया पड़ते ही सब खून के रिश्ते खत्म।" मैं समझ चुकी थी कि इस मरीज को बीमारी की चिंता कम थी और बच्चों से बिछुड़ने का गम ज्यादा।

मेरे बार–बार उनके कमरे के चक्कर लगाने और जबरदस्ती दवा खिलाने के बावजूद चमनलाल की हालत गिरती गई और 23.03.2010 को उसने आखिरी सांस ली। बेचारी बुढ़िया का रोना मुझसे देखा न गया।

मनुष्य के जीवन में रिश्तों की और प्यार की कितनी अहमियत होती है। माँ–बाप अपने बच्चों को कितने कष्टों से पालते पोसते हैं। फिर उन्हें बुढ़ापे में प्यार तथा सहारे की जरुरत होती है जो ना मिलने से उनका दिल टूट जाता है। मैंने अपने टी.बी. के रजिस्टर में चमनलाल की मौत का कारण यद्यपि टी.बी लिखा लेकिन मेरा दिल जानता है चमन लाल टी.बी. से नहीं मरा बल्कि अपने बच्चों की जुदाई के गम में मरा।

दो नटखट बन्दर

शशि बाला
टी.बी.एच.वी., सिविल डिस्पेंसरी
ओल्ड फरीदाबाद

मेरा सपना "गरीब हो या अमीर, हर मरीज को एक जैसा इलाज मिले"

दोनों भाई जवान थे, हम उम्र थे, चंचल थे और ऊर्जा से भरे रहते थे। पहली बार जब वो दोनों मेरे ओल्ड फरीदाबाद के अनाज मण्डी वाले कम्पलैक्स अस्पताल में आये तो काफी उधम मचाया, मानो दो शरारती बन्दर अस्पताल में घुस आये हों । वे एक दूसरे को छेड़ रहे थे, बात–बात पर हँस रहे थे और आपस में नोक–झोंक कर रहे थे। संजीव किसी भी एंगल से बीमार नहीं लगता था । लेकिन उसकी बलगम की रिपोर्ट में टी.बी. के कीटाणु भरे पड़े थे । डा0 रमन कक्कड ने टी.बी. घोषित कर रखी थी। स्पूटम पॉजिटिव मरीज को पहले ही दिन सब सावधानियां बताना बहुत जरूरी कार्य होता है। इस धरती पर इससे ज्यादा जरुरी कार्य कोई नहीं हो सकता। जिस मरीज की बलगम में कीटाणु जाते हैं, उसे फौरन बहुत से उपाय करने पड़ते हैं ताकि किसी और को यह नामुराद बीमारी न लग जाए। इसलिए फौरन सब काम छोड़कर मैं उठ खड़ी हुई उन दोनों को बाहर खुले में पेड़ के नीचे ले गई और बेंच पर बैठने को कहा।

मैंने कहा, "संजीव मुँह पर रुमाल रखो। " उसका भाई बोला, "घूँघट में रहा कर तू" और हँस पड़ा ।

मैंने समझाया, " ज्यादा से ज्यादा समय बाहर खुले में बिताओ जैसे पार्क में, खेत में, आँगन में, पेड़ के नीचे या छत पर ।"

उसके भाई ने चुटकी लेते हुए कहा कि, "तेरी खटिया बाहर तालाब के बीचों बीच बिछा दूँगा" तो मेरी भी हंसी छूट गई । "इधर उधर कभी मत थूकना" मैंने समझाया ।

"जी ऑटो से दिल्ली जाकर थूकूँगा ।" उसने कहा।

" अपने मकान मालिक गुप्ता जी के घर चला जाया कर थूकने" उसके भाई ने कहा।

"शराब बन्द" मैंने कहा। उसका भाई चहक कर बोला, "आज से पूरा क्वार्टर (पव्वा) मेरा।"

संजीव का पहली श्रेणी का इलाज टी.बी. नम्बर 27/09 के अंतर्गत 6 महीने चला और वो ठीक हो गया। जब भी दवा लेनी होती तो वह दोनों इकट्ठे ही आते।

"तुम दोनो कुछ काम–वाम भी करते हो?'' मैने एक दिन उनसे पूछा।

एक बोला – "जी, ये तो बिल्कुल निकम्मा है । मैं इसे बैठाकर खिलाता हूँ ।"

दूसरे ने तपाक से कहा, " उल्टा बोल रहा है मैडम, धरती पे बोझ तो यह खुद है।"

दोनों भाई अपने छोटे से बंद से कमरे में बिना किसी सावधानी के साथ–2 रहते थे। न उनको बिमारी की कोई टेंशन थी और न ही टी.बी. की सावधानियों की रत्ती भर परवाह। उनको इन छोटी–मोटी बातों की फुरसत ही नही थी। वो तो बस एक दूसरे में मस्त थे। इसका नतीजा यह हुआ कि दूसरा भाई हरिओम भी लपेटे में आ गया। उसका भी इलाज टी.बी. नम्बर 760/10 के तहत चला। मैंने दोनों भाईयों को बार–बार समझाया बुझाया लेकिन ये दोनों निश्चिंत रहते और मस्ती से खाते–पीते। हरिओम तो शराब कुछ ज्यादा ही लेता रहता था। फलस्वरूप उसकी हालत इलाज के बावजूद नहीं सुधरी। नवम्बर 2010 में उसको दूसरी श्रेणी का कोर्स टी.बी. नम्बर 1449/10 चलाना पडा।

एक दिन मेरी स्कूटी खराब थी। मैं मथुरा रोड पर परेशान खड़ी थी। जो भी ऑटो आता भरा होता, रुकता ही नहीं । एक ऑटो रुका सवारियों से खचा–खच भरा पडा था। फिर भी ड्राईवर ने उसे रोका और मुझे सिमट कर बैठने का पूरा मौका दिया–फिर बोला, "मैं रोज आपको इसी समय ले लिया करूंगा मैडम।"

''अरे संजीव'', मैं हैरान थी ''ये ऑटो तुम्हारा है?",

"जी नहीं मेरा है । मैंने इसपर रहमकर इसको किराये पर दिया हुआ है।" दूसरा भाई हरीओम बोला जो कि वहीं आगे ड्राईविंग सीट पर चिपककर बैठा था । और फिर दोनों हंसने लगे। हे भगवान ! ये दोनों कभी अलग भी होते हैं?

मैं सोच रही थी कि क्या भाईयों में इनता प्यार भी संभव है?

वक्त बीतता गया। मौसम ने करवट ली। बीमारी के बादल और गहरा गये । हरिओम के दूसरी पारी के इलाज को तो जैसे ग्रहण लग गया। किसी न किसी वजह से बार–बार दवा का नागा हो जाता । कभी दवा पच नहीं पाती। कभी दारु ज्यादा पी लेता । कभी बुखार बढ़ जाता तो कभी खाँसी में खून आ जाता। उसकी हालत तेजी से बिगड़ती गई। निराशा भी साफ झलकती थी। उनके स्वभाव से वो सहज खुशी तो धीरे धीरे नदारद होती जा रही थी ।

आखिरकार वही हुआ जिसका मुझे डर था । 07.05.2011 को हरिओम ने आखिरी सांस ली।

छोटे भाई संजीव के लिए तो यह एक बहुत बड़ा धक्का था। नतीजा वो फिर से बीमार हो गया। उसको दूसरी बार टी.बी. का इलाज शरू करना पड़ा टी.बी. नम्बर 197/12 के तहत। भगवान करे अब वह पूरी तरह स्वस्थ हो जाए। कहते हैं कि समय के साथ–साथ सब घाव भर जाते हैं।

आपसी प्यार उनकी शक्ति थी, पर आज वही उनकी सबसे बड़ी कमजोरी सिद्ध हो रहा था। क्योंकि वही टी.बी. के संक्रमण का कारण बना ।

सहयोगी पति

दीपचन्द भारद्वाज
लैब टैक्नीशियन नांगलजाट
पलवल

मैंने ऐसा दृश्य जीवन में कभी नहीं देखा – वो आदमी एक–एक गोली पत्ते में से निकालता, अपने हाथों से अपनी पत्नी के मुँह में बड़े प्यार से डालता और फिर उसे अपने हाथ से ही एक घूँट पानी पिलाता । डॉटस के पत्ते में से सातों गोलियाँ एक–एक करके अत्यन्त प्यार से उसने अपनी पत्नी को खिलाई जोकि बहुत उदास लग रही थी । फिर वह आदमी अन्दर मेरे पास आया और रोनी सी सूरत बनाकर बड़े ही मन्द स्वर में भावुकता से बोला, "भैया, मेरी पत्नी की टी.बी. की बीमारी ठीक तो हो जायेगी ?" उसका प्रेम भाव देख मेरा मन भर आया। **मैंने कहा, "टी.बी. की बीमारी जानलेवा नहीं है। टी.बी. का इलाज है–यकीनन है। तुम्हारी पत्नी बिल्कुल ठीक हो जायेगी। डरने की कोई जरुरत नहीं है। टी.बी. लाइलाज बीमारी नहीं है। डॉटस इसका उत्तम इलाज है तथा वह भी मुफ्त। शुक्र है तुम झाड़फूँक या किसी नीम हकीम के चक्कर में नहीं पड़े। पलवल का सरकारी अस्पताल ही सही जगह है।** आप सही समय पर यहाँ आ गये हो, बहुत अच्छा किया। बस एक शर्त है। " उसने पूछा "क्या ?"

"लग कर 6 महीने इलाज कराना पड़ेगा। महीने, 2 महीने के इलाज से ही इसके बाहरी लक्ष्ण ठीक हो जायेंगें। दिल करेगा कि अब दवा छोड़ दूँ। यह भूल मत करना । टी.बी. की जड़ गहरी होती है तथा लगकर 6 महीने इलाज करना बहुत जरुरी होता है। " फिर मैंने उस मरीज की एन्ट्री की – राजबाला उम्र 23 साल, पति का नाम बलबीर, गांव बहीन, प्रथम श्रेणी, टी.बी. नं0 336/09। हालाँकि बलबीर किसी निजी कम्पनी में काम करता था लेकिन फिर भी हर बार छुट्टी लेकर नियम से पत्नी के साथ आता व उसे प्रेम से दवा खिलाता व हर दो महीने होने पर स्वयं उसकी बलगम की जाँच भी करवाता। नतीजा–6 महीने में राजबाला बिल्कुल स्वस्थ हो गई।

एक वर्ष बाद दुर्भाग्यवश राजबाला को दोबारा बीमारी बन गई । मैंने पति पत्नी को बैठाकर समझाया कि, **"खाने पीने की कमी से कमजोर व कुपोषित लोगों को, शूगर, एच.आई वी. या नशे की लत वालों को टी.बी. होने का खतरा आम आदमी से ज्यादा होता है और शायद इन्हीं कारणों के चलते ठीक हो जाने पर टी.बी. के दोबारा होने का चांस भी ज्यादा रहता है।"**

राजबाला का दोबारा 8 महीने इलाज चला – टी.बी. नं0 219/10, और मुझे वही मार्मिक दृश्य कई बार दोबारा देखने को मिला। बलबीर ने अपना पतिधर्म का दायित्व पूर्ण निष्ठा के साथ निभाया । अपने पति के प्यार, सहारे व सहयोग के चलते राजबाला फिर बिल्कुल ठीक हो गई।

मैं दीपचन्द भारद्वाज, सभी भारतवासियों से हाथ जोड़कर विनम्र प्रार्थना करता हूँ कि भगवान न करे यदि आपके किसी सगे संबंधी या मित्र इत्यादि को टी.बी. हो जाए तो उसे पूरा प्यार, सहारा व सहयोग दें। उसे घृणा नहीं बल्कि सहानुभूति दें। 6 से 8 महीने तक उसको सही मार्गदर्शन कर उसको स्वस्थ होने में मदद करें व अपना मानव धर्म निभाऐं।

चलता फिरता संसार

डा0 रमन कक्कड़
सम्पादक
(टी.बी. स्पेशिलस्ट)
बी.के. अस्पताल, फरीदाबाद

"डा0 साहब, मेरा बेटा चल नहीं सकता। कृपया उसे बाहर ही जाँच कर लीजिये।" एक गरीब से व्यक्ति ने बड़ी शालीनता से आग्रह किया। मैंने स्टैथो (आला) उठाया और उसके पीछे–पीछे चल दिया। वह मुझे बी.के. अस्पताल के साईकल स्टेण्ड के पास ले गया। सड़क के किनारे पर माल ढोने वाला एक सपाट रिक्शा खड़ा था। उसमें उसका 15 साल का बेटा रजाई बिछाकर लेटा पड़ा था । साथ ही कम्बल में सिमटी हुई उसकी माँ बैठी थी और बड़ी उम्मीद से मेरी ओर टकटकी लगाए देख रही थी।

उस लड़के के गले के साइड में कई गांठें सूज गई थी। जिनमें सूई डालकर पानी निकाल जाँच की गई थी (यानि FNAC)। उसमें टी.बी. घोषित की गई थी। गाँठों की टी.बी. से दूसरों को संक्रमण नहीं होता। उस लड़के की हालत काफी गंभीर थी। उसे जोर से बुखार था। वह बेहद कमजोर था। पिछले 3 महीने से बीमारी ने घेर रखा था। इकलौते बेटे को लेकर माँ–बाप दर–दर भटक रहे थे। रिक्शा में कोने पर पड़े एक थैले में से उसने 3–4 एक्सरे व बहुत सी रिपोर्टें निकाल कर मुझे दीं। फरीदाबाद के विभिन्न अस्पतालों की पर्चियाँ थी। "आज सुबह हम बल्लभगढ़ के एक प्राइवेट अस्पताल से जबरदस्ती छुट्टी करा कर सीधे आपके पास आए हैं"। मैंने हिसाब लगाया – यानि 15 किलोमीटर दूर से रिक्सा पर आये थे। उस मरीज को देखते हुए मेरा ध्यान बार–2 भटक जाता और उनके रिक्शे पर अटक रहा था। रिक्शे के एक कोने में प्लास्टिक की एक बड़ी बोतल में पानी था। पास में गिलास, थाली व दो तीन बर्तन नजर आ रहे थे। पॉलीथीन की दूसरी थैली में कुछ केले तथा 4–5 मोटी–मोटी रोटियाँ झलक रही थी। झोले में कुछेक कपड़े, साबुन व दो–एक बिस्कुट के पैकेट थे। वहीं एक मोमबत्ती, माचिस व ऑडोमोस की टयूब भी लुड़की पड़ी थी। एक कोने में एक तरपाल रस्सी से बंधी पड़ी थी। जाहिर है, वर्षा व धूप का भी प्रबन्ध था ।

उन तीनों के तन मन धन की स्थिति भाँप कर मैं काफी आश्चर्य चकित था। जैसे श्रवण कुमार अपने अंधे माँ–बाप को लेकर तीर्थ यात्रा पर निकला था, ठीक वैसे ही यह रिक्शा चालक अपनी बीवी और बेटे को लेकर महीनों से टी.बी. से संघर्ष कर रहा था। रिक्शे के तीन पहियों पर ही इन तीनों का चलता फिरता छोटा सा संसार बसा हुआ था। "बस मेरा फूल सा बच्चा ठीक हो जाए डा0 साहब" वो बार–बार कह रहा था। खैर हमने उसका टी.बी का इलाज शुरु किया। ऐसे दृढ़ निश्चय व हिम्मत के सामने टी.बी. रोग भला कैसे टिक पाता। उसका बेटा 2 महीने में काफी भला चंगा हो गया। अब बेटा खुद मम्मी पापा को बिठाकर रिक्शा चलाकर मेरे पास लाता था–जाँच के लिये। उसने लगकर पूरे 6 महीने सहीं ढंग से दवा खाई और स्वस्थ हो गया। आजकल उनकी अपनी किरयाने की दुकान है।

अनपढ़ बन्जारा

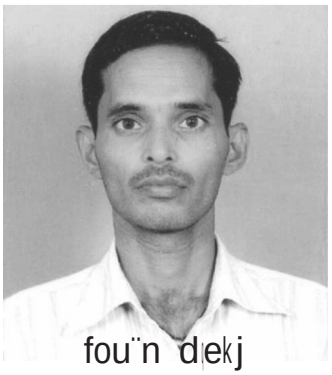

fou"n d|ekj
y|c V|Duhf'k;u
vykoyiqj ih,plh iyoy

मैं बुरी तरह से घबरा गया था, दिल जोर जोर से धड़क रहा था। वो चार थे और मैं अकेला । चारों सड़क के बीचों–बीच हाथ उठाकर खड़े थे । मुझे कुछ नहीं सूझा। जोर से ब्रेक मारी । मेरी मोटर साइकिल रुकते ही चारों ने मुझे घेर लिया था। ये कौन है ? मुझे लूटने लगे हैं या मारने आये हैं ?

वो कुछ कह रहे थे लेकिन मुझे कुछ सुन नहीं रहा था। मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। कुछ देर बाद मैंने सुना– "डा0 साहब, आप रोजाना इधर से हो कर ही अलावलपुर अस्पताल आते जाते हो । हम आपको जानते हैं । " कहते हुए चारों ने हाथ जोड़ दिये । "मेरा भाई राजेन्द्र बंजारा" बहुत सीरियस है जी। उसे देख लो जरा।"

हे भगवान! तो यह बात है, मेरी जान में जान आई। माथे से पसीने की बूंदे पौंछी और अपनी मुस्कुराहट को रुमाल से छुपाया। "बच गए बेटा " मैंने सोचा । उनके पीछे–2 मैं नंगला ककड़ीपुर गाँव की एक झोंपड़ी में गया। वहाँ एक कमजोर व्यक्ति चारपाई पर लेटा पड़ा था। उसकी हालत बहुत खस्ता थी। बिल्कुल दुबला पतला मरियल सा था । लम्बी–लम्बी साँसे ले रहा था । **उसने बताया, "4 महीने से खाँसी बलगम सता रही है। बुखार भी रहता है। भूख खत्म हो चुकी है। सूखता जा रहा हूँ।" लक्षण तो टी.बी. के लग रहे थे। मैंने पूछा, "बलगम की जाँच व एक्स–रे करवाया है?"**

"हम ठहरे अनपढ़ बन्जारे। यहीं गांव के झोला छाप डॉक्टरों से दवा दारु किया है। काफी पैसा भी बर्बाद हो चुका है।" मैंने फौरन उनको साथ लिया, अपने अलावलपुर अस्पताल में पहुँचकर डा0 प्रवीन को दिखाया। बलगम की जाँच मैंने खुद कर दी – टी.बी. के

कीटाणु भारी तादाद में बिखरे पड़े मिले (यानि रिपोर्ट 3 प्लस थी)। दोपहर होते होते डॉटस के एक डिब्बे पर उसका नाम "राजेन्द्र बन्जारा" लिखकर, पहली खुराक वहीं खिला दी । फिर मैंने उसे वापिस उसके गाँव पहुँचा दिया (टी.बी. नं0 273/12)। जाते जाते उसके परिवार वालों से साफ–साफ कह दिया,"इलाज तो चला दिया है। बाकी भगवान की मर्जी।" लेकिन मेरा मन कह रहा था – बचेगा नहीं यह।

कुछ महीनों के बाद अस्पताल से वापिस आते हुए रास्ते में मेरी मोटरसाइकिल का पैट्रोल खत्म हो गया। मैं फँस गया। दोपहर की चिलचिलाती धूप थी। मोटर साइकिल को जैसे तैसे धकेल कर एक किलोमीटर तक तो ले गया। फिर थक कर पास के खेत में एक पेड़ के नीचे रुक गया । सोचा, थोड़ा साँस ले लूँ । बहुत गर्मी लग रही थी ।

एक किसान उस खेत में बैलों से हल चला रहा था। उसने केवल एक लुंगी पहन रखी थी और पसीने से लथपथ था। "इसे गर्मी नहीं लगती ?" मैंने सोचा। इतने में उसने मुझे देख लिया और मेरे पास आया। वो काफी हट्टा–कट्टा मुस्टंडा था। शरीर ऐसे गठा हुआ था मानो साक्षात सलमान खान हो। पहले उसने मुझे पानी पिलाया। फिर मुझे वहीं बैठने के लिए कहा और अपनी साइकिल पर तेजी से गाँव की ओर चल दिया। थोड़ी देर में 2 लीटर वाली पैप्सी की बोतल में पैट्रोल भर कर वापिस आया और मेरी मोटरसाइकिल में पैट्रोल डाला। मैंने उसको 100 रु0 देते हुए कहा, "बहुत–बहुत शुक्रिया।" परन्तु उसने पैसे नहीं लिये। वह हाथ जोड़कर नतमस्तक हो गया और बोला, "मेरे शरीर में जीवन रुपी पैट्रोल आपने ही डाला था, जी । पहचाना नहीं आपने ?

मैं राजेन्द्र बंजारा"।

.....

ताजी हवा

विजय पाल
टी.बी.एच.वी., सरकारी अस्पताल
एम्स बल्लभगढ़ ।

कमरे के भीतर का नजारा देखकर मैं स्तब्ध हो गया। दरवाजे पर ही ठिठक कर रुक गया। मेरे कदम आगे नहीं बढ़ रहे थे। मानो फेविकोल से मेरे जूते फर्श से चिपक गये हों। मैं जिस टी.बी. के मरीज के घर की तस्कीद करने पहुँचा था, उसका नाम था – नर्बदा। 85 साल की एक बूढ़ी अम्मा जिसकी बलगम की रिपोर्ट में 3 प्लस कीटाणु भरे पड़े थे। छोटा सा घुटन भरा कमरा था। एक साइड पर चारपाई पे अम्मा बैठी जोर–2 से खाँस रही थी। अम्मा बहुत बूढ़ी, कमजोर व बीमार लग रही थी। उसकी गोदी में एक नन्हा मुन्ना बच्चा था जिसे वह प्यार कर रही थी व सुलाने की कोशिश कर रही थी। पास में एक खुली परात रखी थी जिसमें उसका बलगम कम और खून ज्यादा नजर आ रहा था। ये बुढ़िया तो शायद ही बचेगी, मैंने सोचा। कमरे के दूसरे कोने में गैस पर एक औरत खाना बना रही थी। खिड़की बन्द थी। रोशनदान तो था ही नहीं। दूसरा दरवाजा भी बन्द पड़ा था। पँखा बंद था।

सबसे पहले मैंने अम्मा से उस शिशु को लिया और बाहर हवा में ले आया। उसकी माँ भी पीछे–पीछे भागी आई। बच्चा मैंने उसके हवाले किया और रौब से वहीं बाहर रुकने को कहा।

फिर मैंने उसके बेटे से सख्ती से कहा, "उठाओ चारपाई"। एक तरफ से मैंने तथा दूसरी तरफ से उसने अम्मा को चारपाई समेत उठाकर बाहर खुले आँगन में दूर ले आये। अम्मा चिल्लाती रही, "अरे, नपूतो कहाँ ले जा रहे हो मुझे? अभी तो मेरी सांसे बाकी है।''

फिर वापिस कमरे में जाकर मैंने खिड़की खोल दी। दरवाजा जो पिछली गली में खुलता था, उसके दोनों पल्ले भी पूरी तरह खोल दिये। सारे घर वाले न नुकर करते रहे । मैंने किसी की एक न चलने दी। फिर मैंने पंखा फुल स्पीड पर चला दिया। ताकि बीमारी वाली व गन्दे कीटाणुओं वाली हवा बाहर भाग जाए तथा ताजी साफ हवा कमरे में प्रवेश कर जाये। फिर मैं कुर्सी खींच कर बाहर अम्मा के पास बैठ गया। परिवार के बाकी सब लोग भी बाहर आ गये।

"अम्मा, तुझे टी.बी. है । फैलने वाली टी.बी । खांसी करते समय मुँह पर रुमाल रखो "अम्मा ने फौरन मुँह पर चुन्नी लपेट ली ।

"उस परात में नहीं थूको। किसी ढक्कन वाली डिब्बी में थूको व उसे हमेशा बन्द करके रखो।" "जी बहुत अच्छा" अम्मा ने कहा। मैंने पूछा "अपनी पोती से प्यार करती हो?" " डा० साहब, वो तो मेरी जान है।"

"तो फिर 2 महीने उससे दूर रहना है। उसे गोदी में उठाना, चूमना या साथ सुलाना उचित नहीं है। वरना तुम उसे भी बीमार कर दोगी ।"

"हे भगवान। उस पर अपना साया भी नहीं पड़ने दूँगी अब।"

"अब दो महीने तक तुम यहीं बाहर खुले आँगन में रहोगी, अन्दर कमरे में नहीं। ठीक है?"

"मैं तो वैसे भी ऊपर जाने को तैयार बैठी हूँ ", अम्मा हँस कर बोली।

बात में सच्चाई तो थी। सो मैंने कहा, " अम्मा सोच लो। जब भी ऊपर जाना है, तब भी जाना है। तो क्यों न दवाई खा के जाऐं?"

अगले हफ्ते मैं फिर गया तो देखा अम्मा वहीं बाहर अकेली लेटी हुई थी। हालत अब भी वैसी ही पतली थी। खाँसी से बुरा हाल था, बुखार भी बहुत था। उसके बेटे ने मेरे कान में धीरे से पूछा, "डा0 साहब, कितना समय बचा है मेरी माँ के पास?"

मैंने ऊँची आवाज में कहा, "अम्मा जो कुछ भी हो रहा है, होने दो। चाहे कुछ भी हो जाए, डाटस का पत्ता नहीं छोड़ना।" अम्मा कमजोर आवाज में बोली, "चाट का पत्ता नहीं छोडूंगी, चाहे कुछ भी हो जाये।"

करीब दो महीने बाद बल्लभगढ़ के सरकारी अस्पताल में मेरे डॉटस सेन्टर पर काफी भीड़ थी। मैं काम में बहुत व्यस्त था।

मैंने अपने सामने बिखरे कागजों पर से नजर उठाई और बाहर की ओर देखा। देख कर दंग रह गया, जमीन आसमान का फर्क पड़ गया था। अम्मा अपने आप अकेली सोटी लेकर चल कर आ रही थी। वह बहुत स्वस्थ लग रही थीं।

मुझे देखकर मन्द मन्द मुस्कुरा दी, "पोती को गोदी ले सकूँ अब?" उसने पूछा।

बिमलेश डागर
टी.बी.एच.वी.
जनरल अस्पताल, पलवल
10 साल का तजुर्बा

कराहने की आवाज से मेरा दिल डूब रहा था। मैं चलते चलते ठिठक कर रुक गई। मुड़कर देखा तो एक औरत अपने घर के दरवाजे पर जमीन पर पड़ी कराह रही थी। इतनी दुबली थी कि मानो कोई हड्डियों का पिंजर हो। मैं उसके पास बैठ गई और उसका हाथ थाम लिया। उसका बदन बुखार से तप रहा था। "कब से बीमार हो बहन ?" मैंने पूछा। **उसने उत्तर दिया "तीन महीने हो गए हैं, बुखार ठीक नहीं हो रहा है। खाँसी भी बहुत तंग कर रही है और कमजोरी भी बहुत आ गई है।" "लम्बी खाँसी, लम्बा बुखार, वजन घटता जाए लगातार, तो टी.बी. का शक करना मेरे यार।" डॉ0 रमन कक्कड़ की पुस्तक की ये लाइने मैं कभी नहीं भूलती। बस मुझे शक हो चुका था कि हो न हो इस औरत को टी.बी. की बीमारी है।**

"तुम्हारा नाम क्या है, बहन ?" मैने पूछा। उसने कहा "लक्ष्मी"। मैने पूछा "तो दवा कहाँ से ले रही हो?" मेरे इस सवाल को सुनते ही बस उसकी आँखों से आँसू बहने लगे, मानो कि गंगा की धारा बह चली हो । रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी। जी भरके रो लेने के बाद लक्ष्मी ने बताया, "मेरा पति काम–वाम नहीं करता । सारा दिन शराब पीता है और जुआ खेलता है । मैं लोगों के घरो में झाड़ू–कटका और चौका वासन करके दो

पैसे कमाती हूँ । वो भी वह छीन लेता है । मेरे कपड़े व घर के बर्तन तक बेच आया है । बच्चों को दो वक्त की रोटी भी नसीब नहीं होती । मैं दवा कहाँ से कराऊँ ? अब तो लगता है मैं कुछ ही दिनों की मेहमान हूँ ।" वह फिर रोने लगी ।

मैं समझ चुकी थी कि यही जादुई पल है लक्ष्मी की मदद करने का । कल तो बहुत दूर है । उसी वक्त मैंने रिक्शा किया और लक्ष्मी को अपने साथ अपने सिविल अस्पताल पलवल में ले आई । जहाँ मैंने उसे डॉ0 जे.पी. प्रसाद को दिखाया । एक्स–रे में टी.बी. के दाग आऐ व बलगम की रिपोर्ट में 2 प्लस कीटाणु मिले । डा0 साहब ने पहली श्रेणी का डॉटस का इलाज शुरु करवा दिया। उसने लगकर 6 महीने तक दवा खाई (टी.बी. 154/11) जिससे उसकी बीमारी बिल्कुल ठीक हो गई और वजन भी बढ़कर 32 से 40 किलो हो गया । लक्ष्मी दोबारा कामकाज करने लगी और अपने बच्चों का भरण–पोषण करने लगी। दवा के आखिरी दिन लक्ष्मी मुझसे बोली, "विमलेश दीदी, उस दिन तुम हमारी गुप्तागंज कोट मौहल्ले वाली गली में मेरे घर के पास किस लिए आईं थी ?" "मुझे याद नहीं। 6 महीने गुजर गए।" मैंने कहा। इसपर लक्ष्मी बोली, "लेकिन मुझे मालूम है दीदी।" "अच्छा, तो बताओ।" मैंने हैरान होते हुए पूछा।

"आपको भगवान ने भेजा था, मुझे दूसरा जीवन प्रदान करने के लिए। मुझमें प्राण फूंकने के लिए!'' लक्ष्मी की बात सुनकर मेरी आँखें नम हो गई।

मामूली सी बलगम की जांच

पवन कुमार,
सीनियर टी0.बी0. लैब सुपरवाईजर,
जनरल अस्पताल एम्स बल्लभगढ़
12 साल का टी.बी. का तर्जुबा

डाट्स प्रोग्राम की बलगम की प्रयोग ाालाओं के आकंड़े इक्ट्ठा करने के सिलसिले में मैं चन्दन नगर बल्लबगढ़ से गुजर रहा था कि राजाराम के घर के सामने अनायास ही मोटरसाईकल की ब्रेक लग गई। दिल किया कि अपने पुराने मित्र को मिलूं। 1 साल हो गया था राजाराम को देखे हुए। टी0.बी0. के प्रोग्राम में काफी व्यस्त रहता हूं। सोचा आज राजाराम को हैरान कर दूंगा।

लेकिन जब दरवाजा खुला तो हैरान तो मै हो गया – राजाराम को देखकर। वो तो बहुत कमजोर हो गया था। बीमार सा दिख रहा था। वो पुरानी चमक व चंचलता बिल्कुल गायब हो चुकी थी। अपने मित्र की हालत देखकर मेरा मन भर आया। आंखे नम हो गई। मैने उससे पूछा कि "दोस्त तुझे क्या हो गया हैं ?"

राजाराम ने अपनी कथा कुछ यू सुनाई –

6 महीने पहले तक तो सब कुछ ठीक–ठाक चल रहा था। बुखार से बीमारी का सिलसिला शुरू हुआ। हल्का–हल्का बुखार व खांसी चलने लगी। मैं काफी कमजोर भी होता गया। अब भी शरीर गिरा–गिरा रहता है। देह टूटती रहती हैं। शाम को सिर दर्द होने लग जाता है। दोपहर बाद थक के चूर हो जाता हूं। बहुत चिड़ चिड़ापन रहता है। घर वालों पर बात–बात पे चिल्लाने लग जाता हूं। कुछ भी अच्छा नहीं लगता हैं।

पहले तो अपनी गली के झोला–छाप डॉक्टर से काफी दवा–दारू किया। बाद में म ाहूर हकीम से पुड़िया इत्यादि खाई। वो हकीम कहता था मोतीझारा हैं। लेकिन हालत बिगड़ती ही गई। मेरा साला मुझे किसी नर्सिग होम में ले गया जहां खून – पै ाब के बहुत सारे महंगे – मंहगे टेस्ट हुए। पता लगा विडाल टेस्ट में टाईफाईड निकला है। महंगे–महंगे टीके लगे।

हार कर मैनें कुछ उधार लिया और आखिकार कारपोरेट अस्पताल में पहुच गया। वहां अल्ट्रा साउन्ड, सी टी स्केन इत्यादि किया गया। परन्तु ईलाज से रत्ती भर भी आराम नहीं आया। उधारी में और डूब गया मै।

मैने उसकी पूरी कहानी बड़े ध्यान से सुनी। फिर मैने राजाराम से कहा' '' लम्बा बुखार, लम्बी खांसी और वजन का घटना टी0.बी0. के लक्षण हैं।''

सारे जहान के महंगे–महंगे टेस्ट करवा डाले। हजारों रूपया पानी की तरह बहा दिया। लेकिन फेफड़े की टी0.बी0. का सबसे जरूरी टेस्ट अभी तक भी नहीं करवाया। "बलगम की जांच" देखने में बहुत मामूली सा टेस्ट दिखता हैं। लेकिन

यही सबसे महत्वपूर्ण हैं। सब सरकारी अस्पतालो में ये जांच मुफ्त उपलब्ध हैं।

मैने राजाराम को एक प्लास्टिक कि डब्बी थमा दी और उसके साथ मै बाहर खुले मैदान मे आ गया। वहां उसे मैने कहां **''अब जोर–जोर से खांसो, अपनी छाती के अन्दर से गाढ़ा–गाढ़ा बलगम निकालो और बार–बार इस डिब्बी में थूको '।**

फिर उसे मोटरसाईकल पर बैठाकर फौरन अपने बल्लबगढ़ सिविल अस्पताल की टी0.बी0. लैब में ले आया।

उसकी बलगम की डिब्बी पर मैने विधिवत लैब नम्बर डाला। मैने अपने दस्ताने व मास्क पहना। डब्बी को खोला और एक तीले से बलगम के गाढ़े हिस्से से कुछ बूंद उठाई और कांच की सलाइड के ऊपर बिछा दिया। उसे सूखने दिया। आधे घन्टे के बाद उस पर रंग बिरंगें कैमीकल सोल्युशन डाले व तैयार किया। माईक्रो स्कोप के नीचे फिट किया। और उसमें टक–टकी लगाके काफी देर तक देखता रहा।

उसकी बलगम के नमूने की जांच करते हुए मै दुःखी भी था और खूश भी। दुःखी – क्योकि राजाराम के बलगम में टी0.बी0. के कीटाणु भरे पड़े थे। खुश – इसलिए कि कम से कम अब उसकी बीमारी का पता तो चला। मैने उसे समझाया **'' राजाराम तुम्हे टी0.बी0. है। तुम्हारी बलगम में टी0.बी0. के कीटाणु पाए गए हैं। ये 100 प्रतिशत सबूत है कि तुम्हे और कोई बीमारी नहीं बल्कि टी0.बी0. ही हैं। 6 महीने से यही तुम्हे सता रही हैं। खांमखा सब डॉक्टरो ने तुम्हारा कितना समय नष्ट कर दिया। तुम्हारा पैसा भी बरबाद कर दिया। बलगम में ये कीटाणु मिलना टी0.बी0. का यकीनी सबूत हैं।**

टी0बी0 का नाम सुनकर राजाराम बहुत परे'kान हो गया।

मैने उसे हौसला दिया कि टी0.बी0. अब कोई जानलेवा या खतरनाक बीमारी नही रह गई। इसका ईलाज हैं। बस इसका ईलाज थोड़ा लम्बा हैं। सही दवा अगर लग के 6 से 8 महीनें खाई जाये तो सब मरीज ठीक हो जाते है। सरकारी अस्पताल में ये ईलाज मुफ्त मिलता हैं। कहीं भर्ती होने की जरूरत नहीं। बस घर पर ही रह के तुम ईलाज करते जाना।

अभी शुरू–शुरू में परिवार को बचाने के लिए तुम्हे बहुत साबधानी बरतनी हैं जैसे ''खांसी करते हुए मुंह पर रूमाल रखों, इधर–उधर कभी मत थूको। ज्यादा से ज्यादा समय बाहर खुले में यानी पार्क में, खेत में, आंगन में, छत्त पे या किसी पेड़ के नीचे रहो। छोटे बच्चों से दूर रहों। इलाज लग के 6 से 8 महीनें तक करना हैं। बीच में भाहर छोड़ के कहीं मत जाना।"

बस राजाराम का डाट्स का पहली श्रेणी का ईलाज भारू हो गया (टी0.बी0. न0. 1183/11)। बिना किसी उतार–चढाव के वो सही होता गया। 6 महीनों में बिल्कुल स्वस्थ हो गया। उसका एक पैसा भी खर्च नहीं हुआ।

चुल्हेनौत टी.बी.

विजय पाल
टी.बी.एच.वी., सरकारी
अस्पताल एम्स बल्लभगढ़

"डाक्टर साहब, आप मुझे बेकार सी दवाई दे देते हो। ढंग की बढ़िया दवाइयाँ दो ना। आपकी दवा से मैं बस महीना भर ठीक रहा। अब फिर वही खाँसी, बुखार, कमजोरी।"

बिरम सिंह की बात सुनकर मुझे बहुत गुस्सा आया। पूरे बल्लभगढ़ में इतना लापरवाह मरीज दूसरा कोई ना था। 4 महीने पहले इसकी बलगम की जाँच में 3 प्लस कीटाणु मिले थे और मैंने इसका टी.बी. का इलाज चालू किया था। मेरे लाख समझाने पर भी यह बाहर ताजी हवा में रहने की बजाए अपने छोटे से बंद कमरे में 4 छोटे–छोटे बच्चों के साथ लेटा रहता था। मुँह पर कभी रुमाल नहीं बांधता था। मुँह खोलकर खाँसता रहता था और वहीं कमरे में ही 24 घण्टे थूकता रहता था। रोज शाम को दारु भी पीता था। इतना ही नहीं, जब इसको काफी आराम आ गया तो इसने अपना दवा का कोर्स बीच में ही छोड़ दिया। इसके घर के कई चक्कर लगाने के बावजूद मैं इसे मनाने में सफल न हो पाया व इसका इलाज पटरी पर नहीं ला पाया। कई महीनों के अंतराल के बाद आज अचानक ये टपक पड़ा है और उल्टे डॉटस की दवाईयों को दोष दे रहा है, मुझे कोस रहा है।

खैर, मैंने इसका पुराना खाता (टी.बी. नं0 727/06) निकाला तथा फिर इसकी दोबारा जांच करवाई। टी.बी. का प्रकोप बहुत बढ़ा हुआ पाया गया। बलगम में फिर 3 प्लस किटाणु मिले। मैंने इसको कसमें दिलवाकर, खूब समझा बुझा कर दोबारा दूसरी श्रेणी में डालकर इसका इलाज चालू करवा दिया (टी.बी. नं0 627/07)। लेकिन यह सुधरने वाला कहाँ था। 2 महीने बाद थोड़ा ठीक होने पर बीरम सिंह फिर गायब हो गया। खुद तो नहीं आया पर बाद में बुरी खबर आई कि वह परलोक सिधार गया है। लेकिन जाते–2 मानो अपनी वसीयत में अपनी बीमारी अपनी पत्नी सोनिया को दे गया। जिसका ईलाज टी.बी. नं0 770/08 के तहत मैंने शुरु किया। देखते ही देखते उसकी तीन बेटियाँ मीनाक्षी (टी.बी. नं0 187/09), दीप्ति (टी.बी. नं0 198/09), विद्या (टी. बी. नं0 199/09) भी इलाज के लिए मेरे पास चली आई।

उसका बेटा सुमित भी बीमार पड़ गया (टी.बी. नं0 200/09)। बिरम सिंह के भाई विजेन्द्र की दो बेटियाँ भी टी.बी. के लपेटे में आ चुकी थी–चंचल (टी.बी. नं0 224/09), और नीमा (टी.बी. नं0 225/09)। उसके दूसरे भाई राजेन्द्र का बेटा साहिल भी टी.बी. से पीड़ित हुआ (टी.बी. नं0 201/09)। उसके भाई गजेन्द्र खुद का भी इलाज चला (टी.बी. नं0 318/11) जो किन्हीं कारणों से सफल न हो पाया तथा अब उसका ऊपरी श्रेणी का इलाज चल रहा है।(टी.बी. नं0 335/12)

सरासर लापरवाही के चलते बीरम सिंह ने अपनी अलिखित वसीयत में अपने परिवार के कम से कम 9 सदस्यों को टी.बी. की बीमारी विरासत में दे दी। 2009 में इस परिवार के छोटे–2 सात बच्चों का इलाज दिल पर पत्थर रखकर कैसे किया ये मैं ही जानता हूँ या मेरा भगवान जानता है। इनमें से एक बच्ची चंचल बेचारी को तो इलाज के बावजूद मैं बचा नहीं पाया।

अभी जंग जारी है।

दो हंसों का जोड़ा

रेखा रानी
टी.बी.एच.वी.

काम करते–2 मेरी नजर खिड़की के बाहर सामने पार्क में एक हंसती–खेलती जोड़ी पर पड़ी । लड़का–लड़की दोनों ने सुंदर–2 कपड़े पहने हुए थे । लगता था इस दंपति की नई–नई शादी हुई थी। सामने चमचमाती बाइक भी खड़ी थी । रह–रहकर वो दोनों खिलखिलाकर हँस पड़ते और मेरा ध्यान अपने काम से हटकर उनकी तरफ चला जाता । मैंने सोचा टाईम पास करने के लिए इन दोनों को जच्चा–बच्चा केन्द्र के प्रांगण के अलावा कोई और जगह नहीं मिली थी, फिर मैं काम में व्यस्त हो गई थी ।

दोपहर को वो दोनों हंसी मजाक करते–2 मेरे कमरे में आ गए । लड़की ने कहा, "नमस्ते दीदी, ये मेरे पति का कार्ड ।" मैं चौंक गई, क्योंकि उस लड़के की बलगम की रिपोर्ट में 3 प्लस टी.बी. के कीटाणु थे । देखने में तो काफी हृष्ट–पुश्ट और स्मार्ट दिखता था । लड़की भी बहुत सुंदर थी । खैर, मैं उठी और दोनों को बाहर वहीं उनकी बाइक के पास बैंच तक ले आई और उनको टी.बी. की सावधानियाँ अच्छी तरह से समझाई । मुझे महसूस हुआ कि बीच–2 में वो शरारत भरी निगाहों से एक दूसरे को निहारते तथा मुस्कुरा देते थे । मेरी हिदायतों की तरफ कोई खास ध्यान नहीं दे रहे थे ।

अगले दिन जब मैं उनके कमरे पर गई तो वही लापरवाही – ना मुँह पे रुमाल, ना आपस में कोई परहेज और कमरे की सब खिडकियाँ इत्यादि बन्द । मैंने दोबारा उनको सावधानियाँ समझाईं । लेकिन उन दोनों की चंचलता जारी रही । बाद में मैं सोचती रही कितना खुश है ये दो हंसों का जोड़ा ।

गिरधारी का टी.बी. नं0 1449 / 10 के तहत ईलाज हुआ । वो ठीक भी हुआ लेकिन लापरवाहियों के चलते दोबारा 684 / 11 तथा फिर तिबारा 716 / 13 के अंतर्गत मैं उसका इलाज करती चली गई । इसी दौरान सुशीला भी बीमार पड़ी (799 / 11) । लगातार बीमारी के थपेड़ों ने उनकी चंचलता पर रत्ती भर भी असर नहीं डाला, हाँ चेहरों की चमक दमक सुन्दरता अब वैसी ना रह पाई थी ।

अभी कुछ दिन पहले डॉ0 साहब ने मुझे एक बेहद सीरियस मरीज का दिल्ली के बड़े अस्पताल के लिए रेफर फार्म बनाने को कहा । वो मरीज सूखकर कांटा हो चुका था । बेहद कमजोर बैठा कराह रहा था । मुझसे उसकी हालत देखी न जा रही थी । उसका कराहना बर्दाश्त न हो रहा था। मैंने उसका रेफर फार्म, एक्स–रे तथा दूसरे जरुरी कागजात तैयार किए तथा उसके बगल में रखे। ताकि जैसे भी हो ये मरीज जल्द से जल्द यहाँ से चला जाए । लेकिन काफी देर हो गई । उसकी पत्नी जो सवारी का प्रबन्ध करने गई थी, आ ही नहीं रही थी । मेरी उलझन बढ़ती जा रही थी । इतने में वो आ गई । मैं उसे देखकर हैरान रह गई, अरे ये तो सुशीला है । ध्यान से देखा तो गिरधारी को पहचान पाई।

कुछ दिन के बाद सुशीला का फोन आया, "दीदी वो नहीं रहे, कह रहे थे दीदी को मेरी नमस्ते कर देना।" बीता समय वापिस नहीं आता ।

दवा के दस डिब्बे

रेखा रानी
टी0.बी0. हेल्थ विजिटर,
डाट्स सेन्टर, जच्चा–बच्चा अस्पताल,
सैक्टर–30, फरीदाबाद

14 साल की प्यारी सी एक लड़की मेरे पास आई और बोली ''दीदी ये लो मेरा कार्ड''। कार्ड पड़कर मुझे झटका लगा। उसे टी0 बी0 थी। बड़े भारी मन से मैने डॉट्स का एक नया डिब्बा निकाला, उसकी सील फाड़ी ओर उस पर लिख दिया ''प्रियंका''। इस डिब्बे में 6 महीने की पूरी दवाईयां मौजूद थी। उसने लगकर 6 महीने इलाज किया (टी बी न. 795/06) और वो ठीक हो गई।

कुछ महीनों बाद वो फिर बीमार पड़ गई और उसे दोबारा टी बी न. 827/07 के तहत दूसरा डिब्बा खाना पड़ा।

डा0 सहाब ने बताया कि खाने पीने की कमी से जो लोग कुपोषित होते हैं या जिन्हे शूगर (मधुमह, डायविटीज) या एच आई वी एड्स या नशे की लत हो उन्हें टी बी होती भी जल्दी है तथा पूरे इलाज के बाद शायद दोबारा रिलैप्स भी होने का खतरा ज्यादा होता है।

कुछ महीनों बाद प्रियंका के पापा तुफानी भी टी बी के शिकार हुए (टी बी न0 1058/07)।

डा0 सहाब ने बताया अगर मरीज की बलगम में टी बी के कीटाणु निकल रहे हो और वो सावधानी न बरते तो परिवार के दूसरे सदस्यों को सक्रमण हो जाता है। जीवन में पहली बार टी बी की सावधानियों का महत्व मेरी समझ में आया। उस दिन से मैंने हर नये टी बी के मरीज को सावधानियां बार–बार सुनाना व समझाना शुरू कर दिया।

बहुत दुख की बात है कि प्रियंका को तीसरा डिब्बा टी बी न. 380/08 और फिर थोड़ा रूक कर चौथा डिब्बा टी बी न. 150/09 भी खाना पड़ा।

सुना है भगवान जब देता है, छप्पर फाडकर देता है। उस परिवार के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। उसके पापा को दूसरी बार टी बी न. 979/09 और फिर तीसरी बार टी बी न. 47/11 के तहत इलाज लेना पड़ा।

इतना ही नहीं प्रियंका के दोनो बड़े भाई राजेश टी बी न. 816/09 और ब्रिजेश टी बी नं. 1034/09 भी इस रोग से न बच पाऐ।

कुछ दिनों बाद एक आखिरी विकेट भी गिरा। छोटी बहन पूजा भी रोग ग्रस्त हो गई टी बी न. 1052/11।

सबने अपना इलाज पूरा कर लिया है सारा परिवार मेरा तथा भारत सरकार का बहुत आभार व्यक्त करता है कि बार–बार उनको निशुल्क दवा मिलती रही।

पश्चाताप के आँसू

राजकुमार शर्मा
सीनियर टी.बी. लैब सुपरवाइजर
बी.के. सिविल अस्पताल
12 साल का अनुभव

बसन्ती अपने ससुराल में बहुत खुश थी । पति पत्नी में बहुत प्रेम था। लेकिन आजकल उसकी तबीयत कुछ खराब रहने लगी थी। शरीर टूटता रहता था। कभी सर दर्द तो कभी कमर दर्द और कई बार हल्का–हल्का बुखार भी हो जाता था। खाँसी भी लगी रहती, भूख कम लगती और कमजोरी बढ़ती जा रही थी । उसका पति रामू यदा कदा कैमिस्ट से कुछ गोलियाँ ले आता । यह सिलसिला 3–4 महीने तक चलता रहा ।

फिर एक दिन एक डा0 के पास गए तो उसने कहा टी.बी. लगती है । बस, वो बसन्ती के जीवन की सबसे मनहूस घड़ी थी । देखते ही देखते रामू का बर्ताव उसके प्रति बिल्कुल बदल गया । वह बात–बात पर उससे कुढ़ने व लड़ने लगा । प्यार की जगह नफरत ने ले ली। बसन्ती सारा दिन खाँसती रहती और बुखार में अकेली पड़ी रोती रहती । कोई पूछने वाला नहीं। उस दिन तो रामू ने हद ही कर दी, "तुझे तो पहले से ही बीमारी थी, तेरी माँ ने धोखे से तुझे मेरे पल्ले बाँध दिया ।"

शरीर तो पहले ही तड़प रहा था, बसन्ती की आत्मा भी छलनी हो गई । वह रोती बिलखती वापस माएके अपनी माँ के पास डबुआ कालोनी में आ गई । अगले दिन सुबह माँ बेटी एक जान पहचान वाली टी.बी.एच.वी. प्रियंका से मिले । पूरी बात सुनने के बाद प्रियंका ने कहा, "यह नाजुक समय है । सब कुछ भूलकर अपनी बीमारी पर पूरा ध्यान केन्द्रित करो । रिश्तों की चिन्ता बाद में करना ।" प्रियंका ने उन्हें फौरन बी.के. अस्पताल मेरे पास भेज दिया । मैंने फौरन उसकी बलगम की जांच व एक्सरे करवा दिये। 3 घन्टे में टी.बी. घोषित हो गई । प्रियंका ने फौरन उसका डॉटस का इलाज भी चालू करवा दिया । बस भगवान मेहरबान हो गया। बीमारी ठीक होने लगी । 2–3 महीने में काफी सुधार गया । "बस दवा पूरे 6 महीने खानी है बसन्ती" प्रियंका ने बार–बार उसे चेतावनी देती रहती है।

इस दौरान बसन्ती को किसी जान पहचान वाले से खबर मिली कि उधर ससुराल में उसका पति रामू बहुत बीमार है, उसके लक्ष्ण भी कुछ कुछ बसन्ती वाले ही हैं । वह रामू को फौरन फोन करती है । "यहाँ बहुत अच्छा इलाज उपलब्ध है। हमारी जान पहचान भी है । तुम फौरन यहाँ चैकअप कराने आ जाओ ।"

शर्म के मारे रामू नहीं आता। वह अपने किये पर बहुत लज्जित होता है । बसन्ती की माँ भी बार–बार फोन पर समझाती है, "शादी तो सात जन्मों का बन्धन होता है । छोटी मोटी बातों से थोड़े ही टूटता है ।"

आखीरकार रामू आ जाता है । उसका भी मैंने बीके अस्पताल में हाथों–हाथ चैकअप करवा डाला। उसे भी टी.बी. ही घोषित होती है। बार बार आग्रह करने पर यहीं फरीदाबाद में सास के पास रह कर टी.बी. का इलाज करवाता है । पत्नी और सास के सेवा भाव से भावुक हो उठा। पश्चाताप के आँसू रामू की आँखों में भर जाते हैं ।

6–7 महीने बाद दोनो स्वस्थ होकर वापिस अपने घर चले जाते हैं । जाने से पहले दोनो सभी स्वास्थ्य कर्मचारियों व डॉटस प्रोग्राम का तहेदिल से शुक्रिया अदा करते हैं कि इन दोनों का पूरा निशुल्क इलाज हो गया।

6 महीने.... वर्ना 24 महीने

पवन कुमार,
सीनियर टी0.बी0. लैब सुपरवाईजर,
जनरल अस्पताल एम्स बल्लभगढ़

विजेन्दर बहुत दुखी स्वर में बोला "खाँसी से बहुत परेशान हूँ जी। बुखार सा बना रहता है। कमजोर होता जा रहा हूँ। काम वाम करने से बहुत थक जाता हूँ, साँस फूल जाती है। कई महीने हो गये।"

मुझे टी.बी. के तीनों लक्षण साफ–साफ दिख रहे थे–लम्बी खाँसी, लम्बा बुखार तथा वनज का घटना। मैंने पूछा, "परिवार में पहले कभी टी.बी. की बीमारी हुई है क्या ?" बिजेन्द्र बोला, "जी मैं खुद पिछले साल टी.बी. की दवा 3 महीने खा चुका हूँ परन्तु इलाज पूरा नहीं किया।"

मेरा शक पक्का हो गया कि हो ना हो इसे दोबारा टी.बी. का प्रकोप बन गया है। केवल 2 घंटे बाद उसकी बलगम की जाँच की रिपोर्ट आ गई। उसमें टी.बी. के कीटाणु मौजूद थे सो बीमारी की पुष्टि हो गई। बलगम में टी.बी. के कीटाणु पाये जाना टी.बी. की बीमारी का सबसे उत्तम सबूत होता है। मामूली सी दिखने वाली यह बलगम की जाँच बहुत महत्वपूर्ण होती है। बिजेन्द्र ने अब की बार इलाज सही ढंग से लेना चालू कर दिया। इलाज के 3,5,8 महीनों पर उसकी बलगम की जाँच हुई जो शुद्ध (यानि कीटाणु–रहित) पाई गई। उसका स्वास्थ्य दिनोंदिन सुधरता गया। वह अन्त में खूब मोटा ताजा हो गया।

अभी हाल ही में वो अपने पिताजी को लेकर आया। जिसने पिछले वर्ष विजेन्द्र की ही तरह वही आराम हो जाने पर वृन्दावन का टी.बी. का इलाज अधूरा छोड़ दिया था। उसकी भी बलगम की जांच में कीटाणु पाए गये।

मैंने बाप बेटे को बैठा कर समझाया, "बार–बार टी.बी. का ईलाज बीच में छोड़ देने से टी.बी. एक भयंकर रुप धारण कर सकती है। जिसे कहते हैं एम.डी.आर. यानि लाईलाज टी.बी.। यानि दवाई बेअसर हो जाती है। दवा पानी बन जाती है। ऐसे में बहुत मंहगी–मंहगी गर्म दवाई 2 साल (यानि 24 महीने) तक खाने की नौबत आ जाती है।"

बिजेन्द्र बोला, "6 माह वाले इलाज में चूक होने पर 8 महीने। अगर फिर चूके तो सीधे 2 साल (यानि 24 महीने) का इलाज। हे भगवान इतना लम्बा इलाज! सोचकर ही मेरी रुह कांप जाती है।"

बिजेन्द्र के पिता जी बोले, "हम इस 24 महीनों वाले झमेले में कतई नहीं पड़ना चाहते जी। अब लगकर 8 महीने दवाई करुँगा। एक भी नागा नहीं करुँगा। किसी प्रकार के नशे को हाथ नहीं लगाऊँगा। संतुलित खाना खाऊँगा। बस मुझे ठीक कर दो जी।" सौभाग्य से बाप–बेटे दोनो ठीक हो गए व आज भी ठीक–ठाक हैं।

दो घूँट पानी

डा० रमन कक्कड़
सम्पादक
बी.के. अस्पताल, फरीदाबाद

अधेड़ उम्र का एक मरीज सुभाष बोला, "डॉ0 साहब दो घूँट पानी पिला दीजिए । बहुत प्यास लग रही है । मुँह सूख रहा है ।" मैंने पूछा, "भैया, घर से पानी पीकर नहीं आए ?" सुभाष बोला, "जी खूब पी के आया था। पर क्या करुँ मुझे प्यास बहुत ज्यादा लगती है।" यह सुनकर मेरे कान खड़े हो गए। मैंने पूछा, "क्या पेशाब भी ज्यादा आता है?" सुभाष बोला, "जी हाँ, बार–बार पेशाब जाता रहता हूँ।" मैंने पूछा, "रात को उठते हो पेशाब के लिए?" वो बोला, "रात को 4–5 बार उठना पड़ता है पेशाब के लिए। फिर थोड़ा पानी पीकर सो जाता हूँ।" "अगर फोड़ा फुन्सी हो जाए तो क्या जल्दी ठीक नहीं होता ?" मैंने फिर पूछा ।

"जी मेरे घाव जल्दी ठीक होने का नाम नहीं लेते ।"

मैंने कहा, "बार–2 प्यास लगना, मुँह सूखना, बार–बार पेशाब आना तथा फोड़े फुंसियाँ होना ये सब शूगर (मधुमेह या शक्कर) के लक्ष्ण होते हैं । फौरन अपना खून का शुगर का टेस्ट करवाओ ।"

मेरा शक सही निकला । उसके खून में शुगर की मात्रा 300 के करीब पाई गई । उसको डायबिटीज़ यानि शुगर की बीमारी थी । सुभाष बोला, "जी, आपने तो शूगर के झमेले में डाल दिया है । असल में मैं तो खांसी बुखार के इलाज के लिए आया था ।"

चुंकि शुगर के मरीजों को खाँसी बुखार होने पर टी.बी. का अंदेशा बहुत ज्यादा रहता है, मैंने फौरन उसका एक्सरे व बलगम की जाँच करवाई तो टी.बी. भी निकल आई ।

मैंने उसे समझाया, "आपको शुगर तथा टी.बी. दोनों रोग हैं । शुगर यदि सही ढंग से कंट्रोल ना की जाए तो टी.बी. का ईलाज फेल हो सकता है । बार–बार शुगर की जांच व दवा लगातार चलेगी, तभी टी.बी. की दवा असर करेगी । वरना शुगर बेकाबू रहने से टी.बी. का ईलाज बेअसर साबित होगा । सुभाष ने शुगर को सही कंट्रोल किया और उसकी टी.बी. की बीमारी भी दवाओं से कुछ महीनों में बिल्कुल ठीक हो गई ।

यह तो होना ही था

सत्यबीर सिंह नर्वत
एस.टी.एस., बी.के.
सिविल अस्पताल फरीदाबाद

टूटे–फूटे मकान को मैने पहचान लिया । कीचड़ भरी गांव की गली के एक कोने मे मैने अपनी रॉयल इनफिल्ड मोटर साईकिल खड़ी कर दी। चिटकनी से दरवाजा खट खटाया।

एक अधेड़ उम्र की औरत ने दरवाजा खोला। उसके हाथ आटे से सने हुए थे। जाहिर है वे रोटी बना रही थी। और मैने इसमे खलल डाल दिया था। मै थोड़ा झिझका । –'' राम लाल है क्या ? " "आप कौन ?" उसने पूछा

"मैं होडल अस्पताल से आया हूं । रामलाल ने अपनी टी0.बी0. की दवा जो लेना बन्द कर दी है। उस सिलसिले मैं। "

''अन्दर आ जाओ, भैया। इन्हे समझाओ । हम तो थक लिये। ऐसा करो भईया, पहले एक गरमा–2 रोटी खाओ ''

मै नीचे पालती मार कर बैठ गया। सबसे पहले मेरी नजर आलू की सब्जी के पतीले पर पड़ी । मेरे मुंह मे पानी भर आया। अचानक मुझे अपना बचपन याद आ गया। जब मेरी मां ऐसे ही नीचे बैठा कर चूल्हे पर रोटियां सेकती थी। और प्यार से ही मुझे खिलाती थी।

उसकी भारी –भरकम आवाज ने मुझे चौकाया '' मुझे जब टी0.बी0. की बीमारी है ही नही तो मेरे पीछे क्यों पड़े हो ?" रामलाल ने कहते–2 जोर से खांसी करी और वही चूल्हे के पास थूक दिया। मेरी तरफ धूर के देख रहा था कि जैसे कोई दुश्मन घर आ गया हो।

रामलाल की बलगम में तो टी0.बी0. के कीटाणु मिले थे। टी0.बी0. तो 100 प्रतिशत थी। बार–2 समझाया जा चुका था। फिर भी न तो मुँह पर रूमाल रखा था। ना ही इधर–उधर थूकना छोड़ा था।

मुझे मालुम है कि बीमारी के कारण मरीज का मूड अक्सर खराब ही रहता है । जैसे–तैसे अपने गुस्से पर काबू पाते हुए उस से कहा।

''बलगम मे टी0.बी0. के कीटाणु पाये जाना यानि टी0.बी0. की पुष्टि । इसमें कोई शक नही आपको टी0.बी0. हैं। ईलाज मे गडबड़ करने से बहुत नुक्सान हो सकता हैं । आप अपने जीवन से तो खेल ही रहे हो परिवार के लोगो को भी खतरे में डाल रहे हो। ईलाज बीच में छोड़ना जान लेवा भी हो सकता है। पहली ही बार टी.बी. को पूरी तरह जड़ से ठीक कर लेना चाहिए। वरना बहुत परेशानी खड़ी हो जाती है।''

"आपकी दवा का सरकारी डिब्बा खुला पड़ा है । एक महीने की दवा तो आप खां भी चुके हो। कुल पांच महीने और । ये लो एक दवा का पता अभी की अभी ले लो। अभी भी कुछ नही बिगड़ा हैं। "

उससे चुपचाप दवा का पत्ता मेरे हाथ से ले लिया। इतने मे उस औरत ने थाली परोस कर मेरे सामने रख दी थी। फिर एक गिलास पानी रामलाल को देते हुए बोली, "दवाई ले लो ।"

रामलाल ने दवा का पत्ते मे से दवा की सातों गोली एक –2 कर के निकाली मुठ्ठी में भरी और देखते ही देखते आग में झोक दी।

मैने खानों की थाली हटायी और उठ खड़ा हुआ। मेरा पेट भर गया था। बाहर आकर जोर से मोटर साईकिल की किक मारी। और गुस्से से तमतमाता हुआ वहा से निकल लिया।

करीब करीब दो महीने के बाद वह औरत मेरे पास अस्पताल मे आयी। ''भैया जरा चलो, रामलाल को देख लो। ''

मै उसे मना न कर पाया । ना चाहते हुए भी उस औरत के पीछे –2 बाहर अस्पताल के मैन गैट तक चलता चला गया । वहां आटो में लेटा पड़ा था रामलाल। सूख कर कांटा हो गया था। टी0.बी0. ने जैसे उसे अन्दर ही अन्दर बिल्कुल खोखला कर दिया था। उसकी हालत बहुत गंभीर व दयनीय थी।

''यह तो होना ही था '' मैं बड़बडाया । उसका एकलौता बेटा जो उस समय कॉलेज में बी0.एस0.सी0. कर रहा था, बिनती भरी निगांहो से मुझे देख रहा था। जो कर सकता था मैने किया।

बस कुछ ही दिनों में रामलाल की जीवन लीला समाप्त हो गई।

अस्पताल में भर्ती

विजेन्दर
एस.टी.एस., तिगाँव

"डा0 साहब, बापू को अस्पताल में भर्ती करवा दो जी।" रमेश ने विनती की।

"क्यों भर्ती करवाना चाहते हो ?" मैंने पूछा।

रमेश पास आकर मेरे कान में धीरे से बोला, "जी इसे टी.बी. हो गई है।" रमेश की साँस से मुझे बीड़ी की बास आ रही थी।

"अच्छा तो फिर अस्पताल में भर्ती क्यों कराना चाहते हो ?" मैंने अपना प्रश्न दोहराया।

"मैंने बताया न—टी.बी. है, इसे टी.बी. ।" रमेश फिर धीरे से बोला।

"हाँ सुन लिया कि टी.बी. है, पर भर्ती क्यों ?" मैंने जोर से पूछा।

"इस बीमारी वाले को तो फौरन अस्पताल में भर्ती करवा देना चाहिए। कहते हैं कई मरीज तो पहाड़ों पर सैनेटोरियम में जाकर भर्ती हो जाते हैं। टी.बी. के मरीज को घर पर थोडें ही न रखा जा सकता है।''

मैंने उसे सख्ती से कहा "आज के मॉडर्न जमाने में भी तुम्हारी सुई 50 साल पुराने ढकोसलों में अटकी पड़ी है। समय बदल चुका है। बढ़िया दवाईयाँ आ चुकी हैं। जिनसे अब टी.बी. का इलाज घर पर ही रहकर बड़े आराम से किया जाता है। अस्पताल में भर्ती होने की कतई जरुरत नहीं होती है।"

"क्यों मजाक कर रहे हो डा0 साहब, इसे घर पे रखने से सबको नहीं लग जायेगा यह छूत का रोग?"

"बिल्कुल नहीं। सही इलाज और सावधानी से ऐसा कुछ भी नहीं होता। बेवजह डर रहे हो तुम।"

"जी बापू सारा दिन खाँसता रहता है, इसकी बलगम में कीटाणु भी हैं।" उसके हाथ में स्पूटम पॉजिटिव रिपोर्ट थी जिसमें लाल पैन से 2 प्लस लिखा था। यानी टी.बी. की पुष्टि। फेफड़े की टी.बी. का एक ही यकीनी सबूत होता है—बलगम की जाँच में कीटाणु पाये जाना। हां —सावधानी अति आवश्यक। सो मैंने समझाया।

"सही इलाज चालू होने के थोड़े दिनों में ही बलगम शुद्ध (कीटाणु रहित) हो जायेगी। बस जब तक कीटाणु नष्ट हो न जाएं तब तक सावधानियाँ बरतो।"

"क्या—2 सावधानियाँ ?" रमेश ने पूछा। मैंने उसके बापू से ऊँची आवाज में कहा, "ज्यादा समय बाहर बिताओ खुले में, पार्क में या छत पर। मुँह पर रुमाल रखो । इधर उधर मत थूको। छोटे बच्चों से थोड़ा दूर रहो इत्यादि।"

मैंने उसके पिता का डॉट्स का इलाज शुरु करवा दिया।उसने लगकर 6 महीने इलाज करवाया। वह बिल्कुल ठीक—ठाक हो गया।

गाँठों की टी.बी.

ज्योति
टी.बी.एच.वी.

ज्योंहि शशि ने गर्दन से चुन्नी हटाई तो मैं घबरा गई । एक संतरे के बराबर गोल–2, लाल–2 गाँठ उठ आई थी, उसकी गर्दन के साईड में, कान के नीचे और कंधे के ऊपर ।

"अरे ! ये क्या है ?" मैं चौंकी । शशि बोली, "जी कुछ दिन पहले से यह गाँठ अपने आप से उठ गई है और बढ़ती जा रही है । दर्द भी होता है ।" मैंने हैरानी से फिर पूछा, "कब से ?" शशि ने उत्तर दिया, "जी करीब महीना होने को आया है । मेरी तबीयत तो पिछले चार महीने से खराब है । बुखार आता जाता रहता है । भूख नहीं लगती और मैं कमजोर होती जा रही हूँ ।"

मैंने डरते–2 उस गाँठ को अपनी उँगली से छूकर महसूस किया । वो काफी सख्त, लाल व गर्म–2 थी । इतने में डॉ0 रमन कक्कड़ एक सिरिंज उठा लाए । उसमें मोटी सुई फिट की और उस सूई को गाँठ में घोंपकर उसमें से पीले रंग का पानी खींचा । सूई को 3–4 दिशाओं में घुमा करके पानी के सेंपल लिए । फिर उस पानी या मवाद को शीशे की छोटी सी स्लाइडों पर बिछाया । उन्हें सुखाने के बाद भिन्न–2 रंगों के रासायनिक पदार्थ डाले । बाद मे ंउन रंगदार स्लाईडों को माइक्रोस्कोप (सूक्ष्मदर्शी यंत्र) में फिट करके अच्छी तरह से देखा व जाँच की ।

"इस पूरी प्रक्रिया को कहते हैं : FNAC ।"

डॉ0 साहब ने समझाया, "फेफड़े को छोड़कर जब टी.बी. दूसरे अंगों में पनपती है तो इसकी पहचान खास टेस्टों द्वारा होती है जिसे कहते हैं बायाप्सी तथा हिस्टोपैथोलॉजी / यानि बीमार अंग का छोटा सा टुकड़ा लेकर उसकी जाँच करना । FNAC यानि सूई से पानी खींचना सबसे पहला साधारण कदम होता है । अगर इसी से बीमारी के सबूत मिल जायें तो फिर अंग का टुकड़ा लेने के झंझटों से बचा जा सकता है ।"

शशि की FNAC रिपोर्ट में टी.बी. घोषित हुई । इलाज चालू हुआ । तीन महीने हो चुके हैं, उसे अब काफी आराम है । गाँठ दिखने में काफी छोटी होती जा रही है । बुखार टूट गया है । भूख लगती है । शशि अच्छे स्वास्थ्य की ओर तेजी से अग्रसर हो रही है ।

चूंकि शशि को गाँठ की टी.बी. है तथा उसे ना तो खाँसी है ना बलगम और ना ही फेफड़े में कोई दाग है, इसलिए शशि के बच्चों को संक्रमण का रत्ती भर भी खतरा नहीं है ।

देश की बहादुर बेटी – नाज़िया

नाजिया (लेखिका)

भारत में आज भी टी.बी. को समाज एक कलंक समझता है । कई मरीज समाज के डर से अपनी बीमारी को छुपाते हैं । कुछ तो लक्षणों की जानकारी होते हुए भी आगे बढ़कर अपनी जाँच नहीं करवाते कि कहीं टी.बी. का ठप्पा ना लग जाए। दोस्त, पड़ोसी व रिश्तेदार मरीज से धीरे–धीरे किनारा करने के चक्कर में रहते हैं। कई बार तो अपने खून वाले भी नफरत करते हैं । ऐसे विपरीत माहौल में बी.ए. की प्रथम वर्श की एक छात्रा नाजिया के द्वारा अपनी जुबानी अपनी बीमारी की कहानी तथा तस्वीर हमारी आने वाली नई पुस्तक में छपवाने का अनुरोध करना एक गज़ब के हौसले का उदाहरण है । हम देश की इस बहादुर बेटी को सलाम करते हैं। आशा करते हैं कि दूसरे मरीज इससे सबक लेंगें व टी.बी. के बारे में संवाद करने से झिझकेंगें नहीं। **(डॉ. रमन कक्कड़)**

मेरी कहानी, मेरी जुबानी

टी.बी. ? मुझे और टी.बी. ? महरौली टी.बी. अस्पताल के डॉक्टर की बात सुनकर मैं एकदम चकरा गई थी, आँखों के आगे अंधेरा छा गया। कानों में सन्नाटा छा गया और मुझे अपना अंत सामने नजर आ रहा था।

जीवन का पिछला सारा घटनाक्रम एक चलचित्र की भाँति मेरे दिमाग में चलने लगा। पहले पापा से बिछुड़ना, फिर मेरी माँ द्वारा मेरा भविश्य सुधारने के लिये मुझे कलकत्ता के अनाथ आश्रम में डालना, मुझे पढ़ाई की लगन लग जाना, इतनी कि अपनी सेहत और खान पान को लगातार नजरअंदाज करते रहना । मेरी सेहत एक साल से गिरती चली जा रही थी । फिर सयोंगवश मैं अपनी मामी के पास दिल्ली आई तो उसने फौरन भाँप लिया मेरी बीमारी को । वो मेरा कान पकड़ कर सीधे मुझे अस्पताल में लाई थी । मुझे अपना जीवन बिल्कुल अस्त–व्यस्त नजर आ रहा था । मामी कब और कैसे मेरा हाथ थाम कर बसों और ऑटो के भीड़–भड़क्के में से होते हुए वापिस घर ले आई थी, मुझे होश नहीं था । बस मैं तो सारी रात रोती रही। टी.बी. ?

अगली सुबह महरौली वाला रैफर फार्म लेकर मेरी मामी मुझे फरीदाबाद के बी.के. अस्पताल में ले आई । डॉ0 रमन कक्कड़ ने मेरी सब रिर्पोटों पर एक नजर डाली और मेरे हाथ में एक ऐसा पुरस्कार थमा दिया कि जिसका मुझे जीवन में सबसे ज्यादा शौक था – पढ़ने के लिए दो पुस्तकें । वहीं पार्क में बैंच पर बैठकर अभी के अभी पढ़ने का आदेश दिया । ये मेरे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण तोहफा था । किसी चमत्कार से कम नहीं था।

ज्यूँ–ज्यूँ मैं टी.बी. के बारे में लिखे गये शब्द वाक्य व अध्याय पढ़ती चली गई, मेरे आँसू सूखते चले गए। मन में आशा की किरण फिर जाग गई और मेरा मन निराशा के पाताल से निकलकर आशा के आसमान में उड़ चला।

डॉ0 रमन कक्कड़ द्वारा दी गयी डॉट्स की दवाईयों ने भी जादू सा काम करना शुरु कर दिया । मेरी मामी की प्यार भरी सेवा तथा पल्ला की टी.बी.एच.वी. शारदा मैडम जी के सहयोग से मैं कुछ ही महीनों में पूरी तरह से स्वस्थ हो गई।

अगर भारत में टी.बी. जैसे शत्रुओं की भरमार है तो यहाँ मददगार फरिश्तों की भी कमी नहीं।

बलगम में खून

रमेश चन्द माहोर
टी.बी.एच.वी.

मेरा पड़ोसी अपनी बीवी बच्चों के साथ मेरे पास अस्पताल आया। मियाँ–बीवी दोनों रोनी सूरत बनाकर बहुत उदास स्वर में बोले, "जी हमारे बेटे को बचा लो।" मैंने उसके लड़के को एक नजर देखा। देखने में वह लड़का तो भंला चँगा लग रहा था । सो मैंने पूछा, "क्या हो गया है इसे ?" पिता बोला "टी.बी. की बीमारी।"

"इसकी बलगम की जाँच रिपोर्ट दिखाओ।" मैंने कहा। "जी बलगम की जाँच तो नहीं कराई अभी।" पिता ने जवाब दिया। ''अच्छा तो छाती का एक्स–रे दिखाओ। "

"एक्स–रे तो नहीं कराया।"

मैंने पूछा "तो किस डा0 ने टी.बी. घोषित की है ?"

"किसी डॉक्टर को अभी नहीं दिखाया। सीधे आपके पास आये हैं।"

"तो तुमने कैसे कह दिया कि इसे टी.बी. है? मैंने पूछा।

"जी इसके मुँह से खून आया है।" उसकी पत्नी बोली "मुँह से खून आना यानि टी.बी.। इससे ज्यादा पक्की निशानी और क्या होगी टी.बी. की डा० साहब?"

मैंने कहा "खाँसी बलगम में खून आने का सीधा मतलब है टी.बी.– यह सरासर गलत है। खून तो दांतों व मसूड़ो से भी आ सकता है।"

उसका बेटा बोला, " जी दाँत तो मेरे ठीक–ठाक हैं।"

फिर मैंने कहा, " गले में कोई बीमारी जैसे टॉसिल या नाक में नक्सीर से भी मुँह से खून आ सकता है।"

वो तीनों सोच में पड़ गये।

"निमोनिया, दमा, ब्रान्काइटिस, धुल–धक्कड़ में काम करने से, हुक्का बीड़ी की लत इत्यादि से भी किसी–2 को खाँसी में खून आ सकता है।

वो चुपचाप मेरी बात सुन रहे थे। सो मैं बोलता गया। "पेट में अल्सर, मेधे में घाव या जिगर की बीमारी में भी खून की उल्टी आ सकती है।"

फिर मैनें उनको समझाया ''बहुत से मरीज व अधकचरे डा० खाँसी में खून आने पर बिना सोचे समझे बार–2 टी.बी. का इलाज करवाते रहते है जो सरासर अनावश्यक है, पागलपन है। टी.बी. का एक ही यकीनी सबूत है–बलगम की जाँच में टी.बी. के कीटाणु पाए जाना। यानि स्पूटम पॉजिटिव रिपोर्ट। जाओ पहले इसकी बलगम की जाँच व एक्स–रे करवाओ।" उसकी बलगम में कीटाणु नहीं मिले व एक्सरे भी साफ आया। बाकी सारी रिपोर्टें भी सही निकली। मामूली दवा से लड़का ठीक हो गया, पाँच साल गुजर गये हैं आज तक ठीक ठाक है।

टी. बी. क्या है

डा० रमन कक्कड़
सम्पादक
बी.के. अस्पताल, फरीदाबाद

टी.बी. यानि टयूबरकुलोसिस या क्षय रोग या तपेदिक की बीमारी एक फैलने वाला रोग है। भारत में हर 3 मिनट में 2 व्यक्ति इससे जान गँवातें है। इसका कारण है एक छोटा सा कीटाणु जो हवा के जरिये एक से दूसरे व्यक्ति में फैलता है।

टी.बी. के लक्षण :– लम्बी खांसी, लम्बा बुखार व वजन का घटना टी. बी. के लक्षण होते हैं । आम तौर पर ये लक्षण इतने मामूली और साधारण होते हैं कि किसी को शक नहीं होता है कि टी.बी. जैसी बीमारी शुरु हो चुकी है। जब भी खांसी, बुखार इत्यादि लंबे समय तक चलता रहे तो टी.बी. का शक करना चाहिए।

टी.बी. होने का खतरा किसे ज्यादा होता है ? :– 1.खाने पीने की कमी से जो लोग कमजोर हैं, गरीबी व कुपोषण का शिकार हैं उनमें यह बीमारी ज्यादा पनपती है। 2.शूगर (डायबीटीज) (मधुमेह)(शक्कर की बीमारी) के मरीजों को। 3. एच.आई.वी. संक्रमित व्यक्ति तथा AIDS (ऐड्स) के रोगी को। 4.नशे की लत वाले को – बीड़ी, सिगरेट, शराब, गुटखा, तम्बाकू, चरस, गाँजा या ड्रग्स के इन्जैक्शन लगवाने वालों को।

फेफड़े की टीबी ही बीमारी के फैलने का जरिया है:– टी.बी. के 80 प्रतिशत मरीज तो फेफड़े की बीमारी से ग्रस्त होते हैं। फेफड़े की टी.बी. ही सबसे ज्यादा पाई जाती है और समाज के लिए सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है। फेफड़े की टी.बी. का ऐसा मरीज जिसकी बलगम में किटाणु जा रहें हों (यानि वह स्पूटम पोजेटिव हो) इस बीमारी को दूसरों में फैला सकता है। इसलिये बलगम की सही जांच करना बहुत जरुरी है। सही इलाज से मरीज की बलगम से कीटाणु जल्द ही साफ हो जाते हैं और संक्रमण रूक जाता है। इसलिये तब तक ऐसे मरीज को सावधानी बरतनी चाहिए जैसे:– खाँसी करते समय मुँह पर रुमाल रखो। ज्यादा से ज्यादा समय बाहर खुले में बिताओ–जैसे पार्क में, खेत में, आंगन में, छत पर या किसी पेड़ के नीचे। बाहर खुले में खांसी के कीटाणु हवा में बिखर जाते हैं और धूप उनको नष्ट कर देती है। इसलिये बाहर ताजी हवा में संक्रमण का खतरा नहीं होता।

टी.बी. शरीर में फेफड़े के इलावा और कहाँ होती है? होने को तो टी.बी. सिर से पैर तक किसी भी अंग में हो सकती है । जैसे गर्दन की गाँठों में, पेट में, जोड़ व हड्डी में, चमड़ी पर, दिमाग में या माँसपेशियों में, जिगर में, गुर्दे में, आँतडियों में, फेफड़े या दिल की बाहरी झिल्ली में, आँख में, रीड की हड्डी में, पुरूष व स्त्री के गुप्तांगों में इत्यादि। फेफड़े को छोड़कर जब टी. बी. दूसरे अंगों में होती है तो यह एक से दूसरे को नहीं फैलती।

क्या टीबी का इलाज है? टी.बी. का इलाज है–यकीनन है । लेकिन थोड़ा लम्बा है। 6 से 8 महीने चलता है। मरीज को महीने दो महीने में ही काफी आराम महसूस होता है। कई बार वो समझता है मैं ठीक हो गया और बीच में इलाज छोड़ देता है जोकि एक भारी भूल है। टी.बी. की जड़ गहरी होती है और इलाज पूरा न करने से कुछ महीनों में बीमारी दोबारा उभर आती है।